चन्दामामा
दिसम्बर १९७०
75 P

चन्दामामा

दिसम्बर १९७०

क्या रखा है अन्दर?
यह तो सिर्फ़ आपको पता है!

जेवरात, मौरूसी संपत्ति, क़ानूनी काग़ज़ात, आपकी सारी क़ीमती चीज़ें... बैंक ऑफ़ बड़ौदा की सेफ़ डिपॉजिट लॉकर में हर तरह से पूर्ण सुरक्षित रहती हैं—न आग से डर, न चोरी का भय। खर्च—बस, १ रु. प्रतिमाह से कुछ ही अधिक।

चिर समृद्धि का सोपान—

बैंक ऑफ़ बड़ौदा

मुख्य कार्यालय: मांडवी, बड़ौदा
भारत तथा विदेशों में ५०० से भी अधिक शाखाएँ

Shilpi-BOB-13a/70 hin

प्यार भरे स्वाद
के लिए
Dalima
coconut cookies
Dalima
coconut cookies
COCONUT COOKIES
Dalima
डालिमा
कोकोनट कुकीज़
डालिमा बिस्कुट प्राईवेट लिमिटेड, राजपुरा (पंजाब)

मुन्नू बदल गया

नुसेकोस प्लास्टिकलें

बच्चों के लिये एक खिलौने बनाने का अद्भुत रंग बिरंगा मसाला जो बार-बार काम में लाया जा सकता है। १२ आकर्षक रंगों में सर्वत्र प्राप्य है।

नर्सरी स्कूल व होम इक्विपमैन्ट कम्पनी
पोस्ट बाक्स नं १४१६, दिल्ली-६

स्वान पैन

अंतरिक्ष युग के छात्रों के लिए

स्वान पेन आधुनिक पीढ़ी का मनपसंद पेन। एकमात्र स्वान ही पेन है जो इतना सहजता से लिखता है, स्वान ऑक्सफोर्ड या केम्ब्रिज पेन इस्तेमाल कीजिए और सफलताओं के चांद-सितारे तोड़ लीजिए।

बढ़िया लिखाई के लिए **स्वान** डिलक्स स्याही इस्तेमाल कीजिए

स्वान (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड
अडवानी चेम्बर्स, सि. मेहता रोड, बम्बई-१
शाखा: १४ बी, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-१

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

महाभारत युद्ध अति भयंकर था। उस युद्ध के अनेक कारण बताये जाते हैं। सब लोग जो कारण बताते हैं, वह दुर्योधन का मत्सर है। लेकिन युद्ध का असली कारण युधिष्ठिर का राजसूय याग था। राजसूय का प्रधान उद्देश्य साम्राज्य की स्थापना करने का था। दुर्योधन को सबने राजाओं का राजा बताया। जरासंध को सम्राट कहा। पर इन दोनों ने साम्राज्यों पर कभी शासन नहीं किया। इस कार्य को पहले संपन्न करने का निश्चय करनेवाले युधिष्ठिर ही थे।

वर्ष : २३ दिसंबर १९७० अंक : ४

विचित्र विजय

कपिशा नगर में माधवशर्मा नामक एक महा पंडित था। वह धनी भी था। उसके श्यामला नामक सुंदर पुत्री थी। वह भी अपने पिता के समान बुद्धिमती थी।

श्यामला बुद्धिमती और सौंदर्यवती भी थी, इसलिए अनेक युवक उसके साथ विवाह करने को आगे आये। पर श्यामला उन सब के सामने कई प्रश्न रखती, उनका सही जवाब न पाकर वापस लौटा देती। उसका निर्णय था कि जो युवक उसके प्रश्नों का सही उत्तर देगा उसी के साथ वह विवाह करेगी।

उसी नगर में राधाकांत नामक एक निर्धन युवक था। उसका पिता भिक्षाटन कर अपना परिवार पालता था। राधाकांत भी बड़ा बुद्धिमान था। वह विद्या से बड़ा प्रेम रखता था। इसलिए उसने कई गुरुओं की सेवा-शुश्रूषा करके अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। फिर भी उसकी ज्ञान की तृष्णा समाप्त नहीं हुई। वह और बड़े विद्वानों के पास जाकर अधिक ज्ञान पाना चाहता था। इस कार्य के लिए उसे धन की आवश्यकता थी। माधवशर्मा से धन की सहायता माँगने के विचार से राधाकांत उसके घर पहुँचा।

श्यामला ने सोचा कि यह युवक भी उसके साथ विवाह करने के ख्याल से आया है। इस भ्रम में पड़कर श्यामला ने राधाकांत से पूछा—"मेरा एक संदेह है। मैंने कई लोगों से पूछा, पर कोई भी उसका समाधान नहीं दे पा रहा।"

"वह संदेह कैसा? बताओ तो सही।" राधाकांत ने पूछा।

"इस लोक में तथा परलोक में भी कौन सुखी हो सकता है? और कौन कष्ट झेलता है?" श्यामला ने पूछा।

नंदकिशोर श्रीवास्तव

ब्राह्मण दरिद्र है। इसीलिए लक्ष्मी उसके घर न जाकर हमारे घर आयी है। घर आई हुई लक्ष्मी को भगाने वाला मूर्ख होता है।"

"अजी, पराया धन नाग के समान है। उसे हमें नहीं छूना चाहिये। मेरी बात सुनिये।" ब्राह्मणी ने समझाया, पर ब्राह्मण ने उसकी बात न सुनी।

दूसरे दिन जब राजा के पास गरीब ब्राह्मण पंचांग का पठन करने आया तब राजा ने उससे पूछा—"क्या तुमने कल कुम्हाड़ा तरकारी बनवाकर खा लिया? कैसा था? स्वादिष्ट था न?"

गरीब ब्राह्मण ने यह सोचकर डर के मारे झूठ मूठ कुछ कह दिया कि सच्ची बात बता देने से राजा को क्रोध होगा—"हाँ महाराज, कुम्हाड़े की तरकारी खायी। बड़ी स्वादिष्ट थी।"

ब्राह्मण ने सोने की बात न बतायी, इसलिए राजा ने सोचा कि उस ब्राह्मण ने कुम्हाड़ा किसी को दान कर दिया है। यह सोचकर कहा—"कल मैंने जो कुम्हाड़ा दिया था, वह छोटा था। आज बड़ा कुम्हाड़ा दिलाता हूँ। इसका स्वाद कैसा है, कल बता देना।" यह कहकर राजा ने ब्राह्मण को और एक बड़ा कुम्हाड़ा दिलाया।
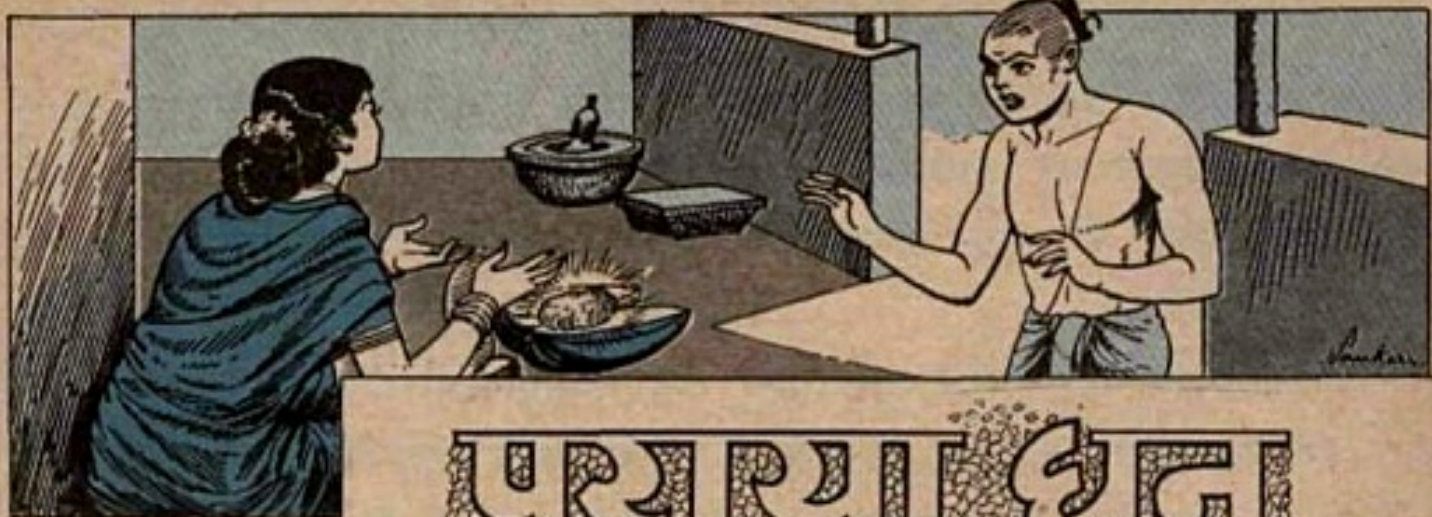
पराया धन

एक गाँव में एक गरीब ब्राह्मण था। वह रोज चार घरों में जाकर पंचांग सुनाता। उससे जो कुछ मिलता, बड़ी मुश्किल से अपना परिवार चलाता था।

राजा को भी उस ब्राह्मण की गरीबी का समाचार मालूम हो गया। उसने उस ब्राह्मण की मदद करनी चाही। इसलिए पंचांग सुनाने के लिए उस ब्राह्मण को खबर भेजी।

ब्राह्मण ने राजा के पास जाकर तिथि, नक्षत्र, शकुन, अपशकुन वगैरह बातें बतायीं। राजा ने उस ब्राह्मण को एक कुम्हाड़ा दिलाया।

ब्राह्मण कुम्हाड़ा ले चल पड़ा। रास्ते में वह एक और ब्राह्मण के घर के सामने खड़े हो बोला–"भाई, मुझे यह कुम्हाड़ा मिला है। हमारे घर में कोई भी कुम्हाड़ा पसंद नहीं करता, इसलिए तुम लोग इसका उपयोग करो।" यह कहकर वह ब्राह्मण कुम्हाड़ा उस गृहस्थ को दे अपने घर लौट गया।

इसके बाद उस ब्राह्मण की पत्नी ने तरकारी बनाने के ख्याल से कुम्हाड़ा फोड़ दिया तो उसमें से सोने का एक पिंड नीचे गिरा।

"ओह! बेचारे, उस पंचांगवाले ब्राह्मण ने यह न जानते हुए यह कुम्हाड़ा हमें दे दिया है कि इसमें सोना है। उसकी संपत्ति हमें नहीं लेनी है। आप जल्दी इसे उस ब्राह्मण को वापस कर दीजिये। पराया धन पाप के समान है।" ब्राह्मण की पत्नी ने समझाया।

सोने को देखते ही ब्राह्मण का मन ललचाया। उसने अपनी पत्नी से कहा–"तुम्हारा कहना सच है। फिर भी वह

गंगा प्रसाद

पाने आया था। इतनी देर तक श्यामला से बातचीत करने के बाद उसके मन में यह विचार आया कि श्यामला की मदद से थोड़ा धन पाया जा सकता है।

इसलिए उसने श्यामला से कहा–"मैं तुम से एक प्रश्न पूछूँगा। उसका जवाब तुम न दे सकोगी तो मुझे तुमको अपने पिता के द्वारा थोड़ी आर्थिक सहायता दिलानी होगी।" श्यामला ने मान लिया।

"इस लोक में सुख भोगकर परलोक में कष्ट कौन झेलता है? इस लोक में कष्ट भोगकर परलोक में कौन सुखी रहता है?" राधाकांत ने श्यामला से पूछा।

श्यामला ने सोचकर उत्तर दिया–"इस लोक में सुख तथा परलोक में कष्ट भोगनेवाला व्यक्ति दुष्ट स्वभाव का धनी व्यक्ति है। वह धन कमाने के वास्ते सब तरह के पाप करता है। कई लोगों के सुख को लूटता है। इस तरह ज़िंदगी बितानेवाला व्यक्ति परलोक में सुखी नहीं हो सकता। इस लोक में कष्ट उठाकर परलोक में सुख भोगनेवाला व्यक्ति योगी है। वह इस लोक में समस्त प्रकार के सुखों को त्याग कर, शरीर को तपाता है और मरने पर परलोक को प्राप्त करता है। वहाँ सुखी रहता है।"

अपने सवाल का जवाब पाकर राधाकांत निराश हो गया। पर इतने में माधवशर्मा ने प्रवेश कर कहा–"बेटा, तुमने मेरी पुत्री के प्रश्न का जवाब दिया है। वह तुम्हारे साथ विवाह करने को तैयार है। यदि तुम भी सहमत हो तो मैं तुम दोनों का विवाह करूँगा।"

राधाकांत अचानक यह बात सुनकर चकित रह गया। उसकी कल्पना के विपरीत अपने कार्य की सफलता पर वह खुश हुआ और उसने श्यामला के साथ विवाह करने की स्वीकृति दी।

"इस लोक तथा परलोक में भी संन्यासी सुखी होता है। उसे सांसारिक चिंताएँ नहीं होतीं। वह किसी पेड़ के नीचे सोता है, जो कुछ मिलता है, उसे तृप्ति के साथ खा लेता है। उसके मन में किसी भी प्रकार की आशा या कामनाएँ नहीं हैं, इसलिए वह कभी निराश नहीं होता। इस तरह इस लोक में सुख की ज़िंदगी जीकर, बंधन मुक्त हो परलोक में जाता है, अतः वह वहाँ पर भी सुखी होता है। इस लोक तथा परलोक में भी दुख झेलनेवाला व्यक्ति भिखारी है। उसकी इस लोक की ज़िंदगी कठिनाइयों के बीच गुज़रती है। धूप में वह जलता है, वर्षा में भीगता है। जाड़े में काँपता है। उसका सारा समय पेट भरने की चिंता में बीत जाता है। फिर भी उसका पेट कभी नहीं भरता। वह ज़िंदगी भर किसी का भी उपकार नहीं कर सकता, इसलिए परलोक में भी उसे रत्ती भर भी सुख नहीं मिलता।" राधाकांत ने जवाब दिया।

राधाकांत के उत्तर से संतुष्ट होकर श्यामला ने उसके साथ विवाह करने का अपने मन में निश्चय कर लिया। मगर राधाकांत के मन में विवाह की कामना न थी। वह माधवशर्मा से धन की मदद
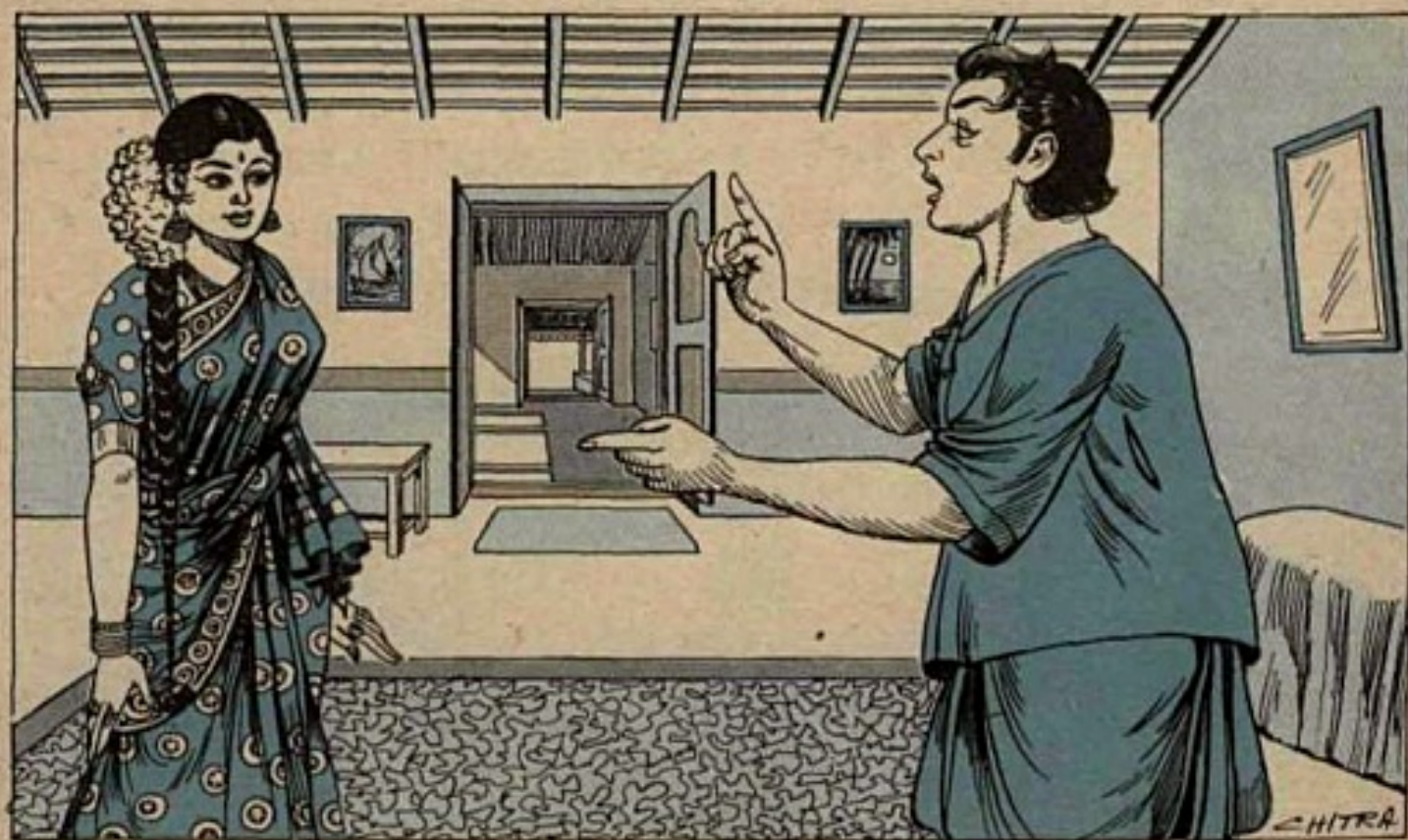
गरीब ब्राह्मण ने उसे ले जाकर उसी ब्राह्मण को दिया, कल जिसे दिया था, और अपने घर चला गया।

उस गृहस्थ से रहा न गया। उसने उसी वक़्त कुम्हाड़े को ज़मीन पर पटक दिया। उसमें से एक नाग निकल आया और गृहस्थ पर फुफकारने लगा।

"अरी! यह तो नाग है! इसने मुझ पर हमला किया है। किसी तरह इसे मारना होगा।" गृहस्थ चिल्ला पड़ा।

"मैंने कल कहा था कि पराया धन नाग के समान है। आपने मेरी बात नहीं सुनी।" ये कहते वह ब्राह्मणी उस गरीब ब्राह्मण के घर दौड़ गयी और बोली—"भैया! मेरे पति को बचाओ, तुम अपना सोना वापस ले लो। मेरे पति को नाग से बचा लो। मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ।"

गरीब ब्राह्मण की समझ में यह बिलकुल न आया कि उसका सोना क्या है और नाग क्या है। वह चकित हो जड़वत खड़ा रहा।

गृहस्थ की पत्नी ब्राह्मण का हाथ पकड़ उसे अपने घर खींच ले गयी। तब तक उस गृहस्थ के घर के सामने काफी लोग जमा हो गये थे। गृहस्थ हाँफते हुए सारा समाचार सबको सुना रहा था। इस गड़बड़ में साँप कहीं भाग गया।

गरीब ब्राह्मण को देखते ही गृहस्थ ने कहा—"मैंने तुम्हारा सोना हड़प लिया, जिससे आज मैं नाग के हमले से मरते मरते बाल-बाल बच गया। तुम अपना सोना लेते जाओ।"

राजा ने पंचांगवाले ब्राह्मण के पीछे अपने भटों को भेज दिया था। उन लोगों ने सारी घटना देखी और राजा को सुनायी। राजा ने जो चाल चली थी, उसके सफल हुए देख वह बहुत प्रसन्न हुआ।

अमर वाणी

विपदि धैर्यं, मथाभ्युदये क्षमा,
सदसि वाक्पटुता, युधि विक्रमः,
यशसि चाभिरुचि, र्व्यसनं श्रुतौ,
प्रकृतिसिद्ध मिदं हि महात्मनां ॥ १ ॥

[विपदा में धैर्य, ऐश्वर्य में सहनशीलता, सभा में वाक्पटुता, युद्ध में वीरता, कीर्ति के प्रति अभिरुचि, शास्त्रों में आसक्ति—ये सब बड़ों के सहज गुण हैं ।]

संपत्सु महतां चित्तं भवे दुत्पल कोमलं,
आपत्सु च महाशैल शिला संघातकर्कशं ॥ २ ॥

[संपत्ति के दिनों में बड़ों के मन कुमुद की भाँति कोमल तथा विपदा के समय पहाड़ी शिला की भाँति कठोर होते हैं ।]

प्रदानं प्रच्छन्नं, गृह मुपगते संभ्रम विधिः,
प्रियं कृत्वा मौनं, सदसि कथनं चाप्युपकृतेः,
अनुत्सेको लक्ष्म्यां, निरभिभवसाराः परकथाः,
सतां केनोद्दिष्टं विषम मसिधाराव्रतमिदं? ॥ ३ ॥

[गुप्त रूप से दान करना, अतिथियों का आदर करना, दूसरों की भलाई करने पर मौन रहना, उपकार पाने पर सब पर प्रकट करना, संपत्ति के पाने पर गर्व न करना—ये सब तलवार की धार पर चलने के समान है । क्या किसी के कहने पर ये गुण मनुष्य में पैदा होते हैं ?]

शिलारथ

[२]

[खड्गवर्मा तथा जीवदत्त नामक दो क्षत्रिय युवक पद्मपुर के राजा पद्मसेन से एक जंगल में मिले। शाम को सब लोग राजधानी नगर में पहुँचे। उस समय राजपथ पर पट्ट हाथी अंधा-धुंध दौड़ते हलचल मचाये हुए था। तब खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने उसे मार डाला। राजकुमारी पद्मावती ने उन पर फूलों की वर्षा की। इसके बाद-]

मंत्री सोमदेव की सलाह राजा पद्मसेन को बहुत ही उचित मालूम हुई। युवरानी पद्मावती ने बहुत समय पूर्व ही यह शपथ की थी कि वह एक महान वीर के साथ ही विवाह करेगी। उसके साथ विवाह करने के लिए अनेक राजकुमार आगे आये, पर पद्मावती ने कोई न कोई बहाना करके उनके साथ विवाह करने से इनकार किया था। राजकुमारी ने अपने पिता से कहा था कि वे राजकुमार देखने में सुंदर और बुद्धिमान जरूर हैं, मगर उनमें वीरों के लक्षणों का अभाव है।

महाराजा पद्मसेन को खड्गवर्मा तथा जीवदत्त दोनों महान वीर प्रतीत हुये। उन दोनों ने जंगल में खूँख्वार बाघों का जैसे शिकार किया था, उसका ढंग अनोखा था। राजा ने प्राचीन काल की कहानियों में इस प्रकार के साहस और वीरता की कहानियाँ

चलनेवाले सभी लोग डरकर भाग गये, यह बात सही है। यह भी सत्य है कि आपके साथ आये हुए दो युवकों ने साहस के साथ उस हाथी का सामना किया और उसे मार डाला। लोगों की भी रक्षा की। पर इस छोटी-सी बात के लिए उनको हम महान वीर कैसे मान सकते हैं?"

"तुम्हारा कहना ठीक है, पर कौन-सा कार्य करने पर कोई महावीर कहलायगा? यह बात तुम्हीं स्पष्ट रूप में बतला दो। मेरी दृष्टि में खड्गवर्मा तथा जीवदत्त दोनों महान वीर हैं।" राजा ने कहा।

"तब तो उनको मेरे समक्ष बुलवा लीजिये। मैं अभी निर्णय कर दिखा दूँगी कि वे कैसे वीर हैं? पर आप उनसे ये प्रश्न न पूछियेगा।" पद्मावती ने अपने पिता से बताया कि उनको उन वीरों से कैसे प्रश्न पूछने हैं।

इसके बाद राजा ने मंत्री तथा खड्गवर्मा और जीवदत्त को बुला भेजा। थोड़ी ही देर में वे तीनों राजा की सेवा में आ पहुँचे।

राजा पद्मसेन ने खड्गवर्मा तथा जीवदत्त से पूछा—"तुम दोनों का देशाटन पर निकलने का कारण क्या है?"

सुनी थी, मगर प्रत्यक्ष रूप से उसने ऐसी वीरता कहीं नहीं देखी थी।

सोमदेव के आदेशानुसार खड्गवर्मा तथा जीवदत्त के लिए राजा के अतिथि गृह में ठहरने का प्रबंध किया गया था। राजा ने अपनी पुत्री को बुलाकर उसे उन दोनों वीरों के साहस का वृत्तांत सुनाया और पूछा—"बेटी, उन वीरों ने जब हाथी का वध किया, तब तुमने तथा तुम्हारी सहेलियों ने उन वीरों पर फूलों की वर्षा की, क्या उन दोनों में से कोई तुम्हें पसंद आया?"

पद्मावती ने मुस्कुराकर जवाब दिया—"पिताजी! पट्ट हाथी को देख राजपथ पर

इस पर जीवदत्त ने उत्तर दिया–"हम जिस गाँव में पैदा हुए, वहाँ पर अपनी शक्ति, सामर्थ्य तथा अपनी विद्याओं का प्रदर्शन करने के लिए उचित मौका हमें नही मिला। इसलिए हम देशाटन पर निकल पड़े। आपके सामने हम अपनी सारी विद्याओं का प्रदर्शन करना चाहते हैं।"

"किसलिए तुम दोनों अपनी विद्याओं का प्रदर्शन करना चाहते हो?" राजा ने पुन: पूछा। राजा का यह सवाल सुनने पर खड्गवर्मा का चेहरा लाल हो उठा। जीवदत्त ने अपने मित्र की ओर इस प्रकार देखा, ताकि वह शांत हो जाय, तब मुस्कुराते हुए उसने कहा–"महाराज, जंगल में जाकर तपस्या करनेवाले कार्य को छोड़कर मनुष्य इस दुनिया में जो भी काम करता है, वे सब वास्तव में अपना पेट पालने के लिए ही। हम यह कार्य यश और आदर के द्वारा संपन्न करना चाहते हैं।"

जीवदत्त का उत्तर सुनकर राजा ने अपनी पुत्री की ओर देखा। पद्मावती ने मंत्री सोमदेव की ओर मुखातिब हो कहा–"वे दोनों वीर समझ गये होंगे कि मैं यहाँ पर क्यों उपस्थित हूँ।"

खड्गवर्मा और जीवदत्त ने परस्पर एक दूसरे का चेहरा देखा। मंत्री ने भाँप
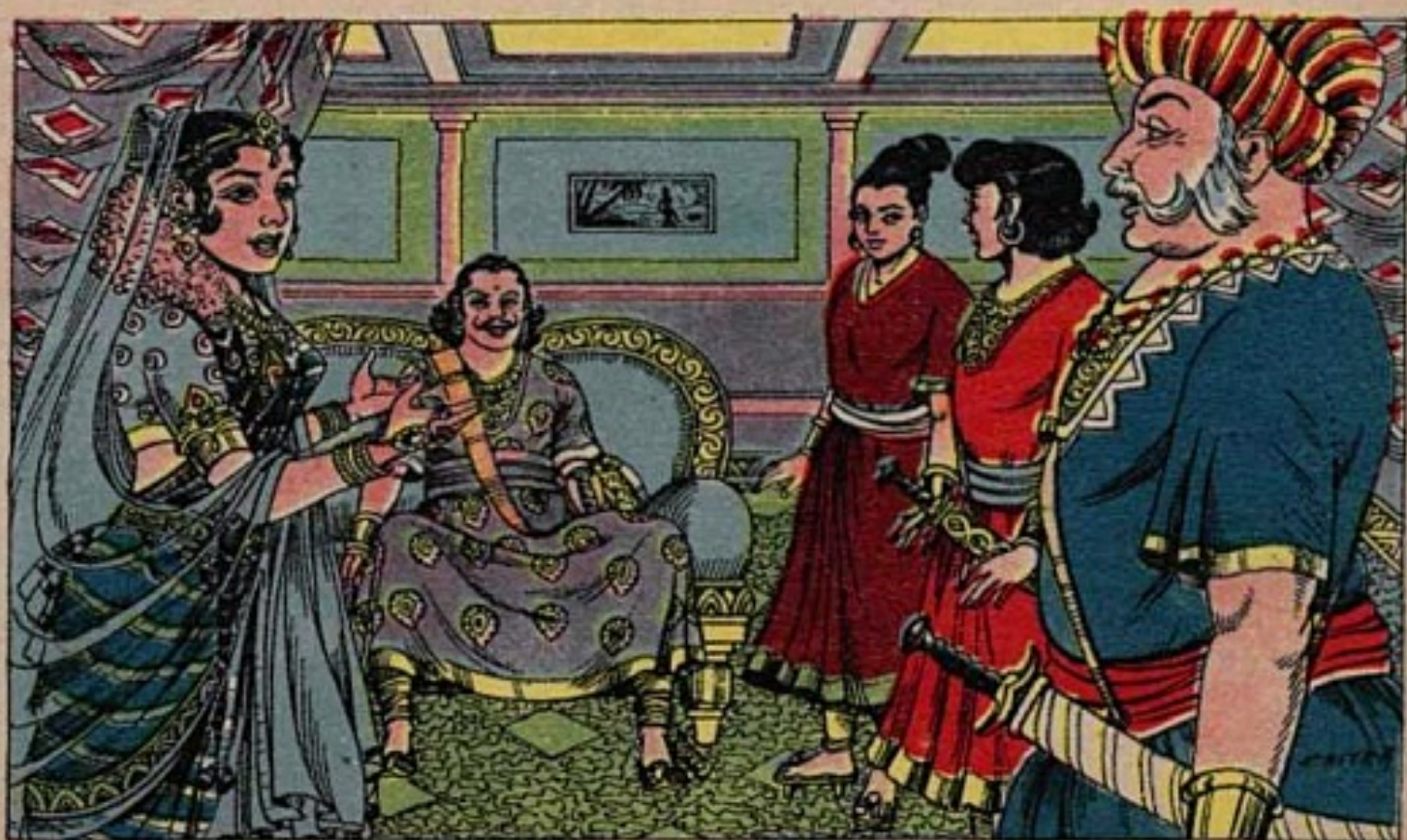
"मैंने युद्ध-विद्याओं के साथ मंत्र-शास्त्र का भी अध्ययन किया है। मेरा विचार है कि इन दोनों विद्याओं में मेरी समता कर सकनेवाला वीर इस दुनिया में कोई दूसरा न होगा।" जीवदत्त ने कहा।

ये बातें सुनते ही राजकुमारी पद्मावती झट घूम पड़ी और अपनी सहेली के हाथ से एक वस्तु लेकर उसे उन वीरों को दिखाते हुए बोली–"यह एक शिलारथ है। विन्ध्याचल में कहीं पर स्थित एक शिलारथ की यह एक प्रतिकृति है। मैंने जो सुना, उसके अनुसार उन पहाड़ों में स्थित शिलारथ को हिलानेवाला संसार का सर्व श्रेष्ठ महान वीर है। मैं उसी वीर के साथ विवाह करूँगी।"

पद्मावती की बातों ने राजा तथा मंत्री को भी आश्चर्य में डाल दिया। आज तक उन दोनों ने उस शिलारथ का समाचार तक न सुना था। राजा तुरंत अपने आसन से उठ खड़ा हुआ और राजकुमारी के हाथ से उस छोटे से शिलारथ को लेकर उलट-पलट कर उसकी जाँच करने लगा। मंत्री सोमदेव बगल में खड़े हो शिलारथ की ओर विस्मय के साथ देखता रह गया।

लिया कि दोनों युवकों ने राजकुमारी का आशय नहीं समझा। इस पर उसने समझाया–"युवरानी के योग्य वर को चुनने में महाराजा काफ़ी परेशान हैं। राजकुमारी ने यह प्रतिज्ञा की है कि वह एक महान वीर के साथ ही विवाह करेगी।" इसके बाद मंत्री ने खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को समझाया कि पद्मावती ने कैसे अनेक राजकुमारों के साथ विवाह करने से इनकार किया है!

"वीरता के प्रदर्शन का प्रश्न हो, तो मैं कहूँगा कि खड्ग-युद्ध में मुझे हरानेवाला कोई वीर न मिलेगा।" खड्गवर्मा ने कहा।

जीवदत्त ने खड्गवर्मा के कान में धीरे से कुछ कहा, तब महाराजा की ओर मुड़कर निवेदन किया–"महाराज, हम कैसे विश्वास करे कि इस छोटे से शिलारथ की आकृति का एक बड़ा शिलारथ विन्ध्याचल में कहीं है? इसका प्रमाण क्या है?"

राजा ने राजकुमारी की ओर देखा। राजकुमारी ने मंदहास करते हुए कहा–"इसका प्रमाण मैंने साधारण व्यक्तियों द्वारा नहीं बल्कि अमानवीय शक्तियों द्वारा जान लिया है।"

"युवरानी के वास्ते भले ही न हो, पर हम अपने को महान वीर साबित करने के लिए विन्ध्याचल में स्थित उस शिलारथ का पता लगाने और उसे हिलाने के लिए अवश्य जायेंगे। परंतु महाराज, उस रथ का समाचार देनेवाली उन अमानवीय शक्तियों का तो हम परिचय मिलना है न?" जीवदत्त ने कहा।

"हाँ, बेटी! यह समाचार देना न्याय संगत ही होगा।" राजा ने कहा।

पद्मावती ने याद करते हुए कहा–"पिछली पूर्णिमा के दिन मैं छत पर सो रही थी। अर्ध रात्रि के समय कोई आहट पाकर मैं जाग पड़ी। उस वक्त एक बड़े राक्षस की आकृति वाला एक काला मेघ

आसमान में उड़ता आया और मेरे ऊपर पल भर के लिए रुक गया। मैं घबराकर अपनी सहेलियों को पुकारने को थी कि इतने में उस आकृति ने अपना हाथ नीचे की ओर बढ़ाया। तुरंत वह शिलारथ धम्म् से मेरी बगल में गिर पड़ा। उस आवाज़ को सुनकर मेरी सभी सहेलियाँ जाग पड़ीं। तभी वह काली आकृति आसमान में अंतर्धान हो गयी। उस शिलारथ से एक चिट बंधा हुआ था जिस पर लिखा था कि इस शिलारथ की आकृतिवाला बड़ा रथ विन्ध्याचल में है। क्या मैं उस चिट को मंगवा दूं?"

इस पर राजा पद्मसेन तथा मंत्री सोमदेव कुछ कहने ही जा रहे थे कि इतने में जीवदत्त ने कहा–"हम विश्वास करते हैं कि राजकुमारी की बातों में असत्य नहीं है। आकाश में मेघ की भांति उड़नेवाला व्यक्ति कोई राक्षस, किन्नर अथवा विद्याधर होगा! उसने किसी स्वार्थवश शिलारथ की इस प्रतिकृति को राजकुमारी के पास गिरा दिया है। अब हमें विदा दीजिये। कल सवेरे हम उस मूल शिलारथ का पता लगाने चल पड़ेंगे और उसे हिलाने का प्रयत्न करेंगे।"

"मैंने तुम दोनों की वीरता को अपनी आँखों से देखा है। मैं आशीर्वाद देता हूँ कि तुम लोग विजयी होकर लौट आओ।" राजा पद्मसेन ने कहा।

"मैं भी तुम दोनों को आशीर्वाद देता हूं। तुम दोनों में जो अपने को महान वीर साबित करोगे, उसी के साथ राजकुमारी विवाह करेगी।" मंत्री सोमदेव ने समझाया।

जीवदत्त ने एक क़दम आगे बढ़ाकर कहा–"मुझे उस शिलारथ की प्रतिकृति को एक बार देखने दीजिये। उन विन्ध्यपर्वतों के प्रदेश में प्राचीन काल में अनेक महा नगर उठे और काल प्रवाह में मिट्टी में मिल गये

है। वहाँ के खण्डहरों में ऐसे अनेक शिलारथ हो सकते हैं। हमें तो इसी की आकृतिवाले शिलारथ को ही हिलाना है न?"

राजा ने शिलारथ की प्रतिकृति को जीवदत्त के हाथ में दिया। खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने उसकी भली-भाँति जाँच की, तब उसे राजा के हाथ देकर उनसे आज्ञा लेकर अतिथि-गृह में चले गये।

तब तक काफ़ी रात बीत चुकी थी। खड्गवर्मा तथा जीवदत्त आराम से सोने लगे। थोड़ी देर बाद उस कक्ष में कोई आहट हुई जिस से जीवदत्त की आँखें खुल गयीं। दो नक़ाबवाले व्यक्ति कमरे के एक कोने में एक सेंध के पास खड़े हो झुककर देख रहे थे। इसी वक़्त नक़ाबवाला एक और व्यक्ति उस सेंध में से भीतर आया।

जीवदत्त को जब मालूम हुआ कि ये लोग उनको मारने के लिए आये हुए हत्यारे हैं, तब जीवदत्त चिल्ला पड़ा—"खड्गवर्मा, उठो, हत्यारे घुस आये हैं।" इसके बाद उसने झट अपने सरहाने से अपना दण्ड हाथ में लिया।

नक़ाबवाले तीनों व्यक्तियों ने एक साथ अपने म्यानों से तलवारें निकालीं। उनमें से दो जीवदत्त की ओर तथा एक व्यक्ति खड्गवर्मा की ओर लपके। जीवदत्त अपने

ऊपर हमला करनेवालों से बचकर उस ओर लपका, जहाँ सोनेवाले खड्गवर्मा पर एक व्यक्ति हमला करने जा रहा था। जीवदत्त ने अपने दण्ड से उस व्यक्ति के सर पर दे मारा। चोट खाकर वह नक़ाब वाला तत्काल नीचे गिर पड़ा।

इसी समय खड्गवर्मा जाग उठा। अपने एक साथी को मरे देख बाक़ी दोनों सेंध में से भागने की कोशिश करने लगे। एक व्यक्ति सेंध में से बाहर निकल भागा और दूसरा आधा ही घुस पाया था कि जीवदत्त ने उसकी एक टांग पकड़कर चूहे की भांति उसे कमरे के अन्दर खींच लिया और दीवार की ओर फेंक दिया।

"भागनेवाले दुष्ट की बात मैं देख लूंगा।" यह कहकर खड्गवर्मा सेंध में से घुसकर बाहर चला गया। तब तक नक़ाब वाला व्यक्ति भागकर अतिथिगृह की चहर दीवारी के निकट पहुँच गया। खड्गवर्मा ने उसे चेतावनी देते हुए कहा—"ठहर जाओ, पीठ दिखानेवाले दुश्मन का मैं वध नहीं करता, लेकिन भागने की कोशिश करोगे तो जान से हाथ धो डालोगे!"

उसकी बातों की परवाह किये बिना नक़ाबवाला छे फुट ऊँची दीवार पर उछल पड़ा। वह अपने हाथों से दीवार के ऊपरी भाग को पकड़े दूसरी ओर खिसकने ही वाला था कि तब तक खड्गवर्मा वहाँ जा पहुँचा। खड्गवर्मा को सिर्फ़ नक़ाबवाले के पैर दिखाई दे रहे थे।

खड्गवर्मा ने यह सोचकर निशाना लगाये उसके पैरों पर तलवार फेंकी कि वरना वह भाग जायगा। निशाना अचूक निकला और नक़ाबवाले का पैर कटकर नीचे आ गिरा। नक़ाब वाला दीवार के उस तरफ़ नीचे गिर पड़ा। तभी पहरा देनेवाले दो राजभट चिल्लाते उस ओर दौड़ते आने लगे। (और है)

हार-जीत

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने यों कहा–"राजन, तुम्हारी लगन प्रशंसनीय है। लेकिन कभी कभी बड़े बड़े समर्थ व्यक्ति भी अपनी लगन को छोड़ हाथ लगे परिणाम को त्याग देते हैं। इसके प्रमाण स्वरूप मैं तुमको सुवर्णखेटपुर के युवराज जयसिंह की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा–"सुवर्णखेटपुर का राजा शूरसेन एक बार बीमार पड़ा। इस वजह से शूरसेन का पुत्र जयसिंह गद्दी पर बैठा और मनमाने ढंग से शासन करने लगा।

जयसिंह स्वभाव से ही अधिकार की दाह रखता था। सब पर हुकुम चलाने

वेताल कथाएँ

का उसे बड़ा शौक था। वह अपने राज्य से संतुष्ट नहीं रह पाया। इसलिए आसपास के राज्यों पर हमला करके उसने युद्ध किये और छोटे-मोटे राज्यों को जीतकर अपने राज्य में मिला लिये। उन सभी राजाओं को अपने सामंत बनाकर उन पर अपना अधिकार चलाने लगा।

इसी सिलसिले में जयसिंह ने तोमरपुर नामक एक छोटे से जंगली राज्य पर हमला किया। तोमरपुर का राजा वीरोत्तुंग उसके हाथों में हार गया।

जयसिंह ने वीरोत्तुंग के राजमहल में प्रवेश करके यह आदेश दिया कि संधि की

शर्तों के पूरे होने तक वीरोत्तुंग तथा उसका परिवार राजमहल को छोड़ बाहर न जावे। वह वीरोत्तुंग के परिवार के साथ जब परिचय पा रहा था, तभी उसकी दृष्टि वीरोत्तुंग की पुत्री शरावती पर पड़ी।

शरावती न केवल सुंदर थी, बल्कि वह आकर्षक भी थी। जयसिंह अविवाहित था। उसने सोचा कि उसकी पत्नी केवल शरावती ही बन सकती है।

यह निश्चय करके जयसिंह ने वीरोत्तुंग के प्रति अपना विचार बदल लिया और कहा—"हमारे बीच अब संधि होनी है। संधि की और शर्तों की कोई जरूरत नहीं। यदि तुम अपनी पुत्री का विवाह मेरे साथ करने को तैयार हो तो मैं तुम्हारा राज्य तुमको वापस कर दूंगा।"

"मैं अपनी पुत्री से बात कर अपना निर्णय सुनाऊंगा।" वीरोत्तुंग ने कहा।

जब वीरोत्तुंग ने अपनी पुत्री से एकांत में बात की, तब उसने कहा—"अपने विवाह के संबंध में मेरा कोई विचार नहीं है। आप जिनके साथ विवाह करने का आदेश देंगे, मैं उन्हीं के साथ विवाह करूंगी।"

"वास्तव में जयसिंह के साथ तुम्हारा विवाह करना मुझे पसंद नहीं है। देखने में
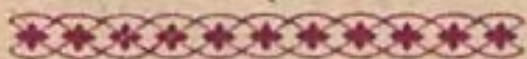
वह सुंदर जरूर है, मगर लोग कहते हैं कि वह राज्य और अधिकार की दाह ज्यादा रखता है। यह भी सुना है कि वह एक कठोर शासक है। यदि मैं अपनी इच्छा से तुम्हारा विवाह उसके साथ न करूँ तो भी वह बलात् तुम्हारे साथ विवाह कर सकता है। साथ ही वह हमारी बड़ी हानि भी कर सकता है।" वीरोत्तुंग ने कहा।

"ऐसी हालत में आप उनकी इच्छा के अनुसार ही कीजिये।" शरावती ने कहा।

वीरोत्तुंग ने जयसिंह को बताया कि उसकी पुत्री विवाह करने को मान गयी है। इसके बाद मुहूर्त का निर्णय कर वह शादी की तैयारियाँ करने लगा। जयसिंह मुहूर्त के दिन की बड़ी आतुरता के साथ प्रतीक्षा करने लगा। वह शरावती से स्वयं बात करना चाहता था, पर उसे मौक़ा न मिला।

एक दिन शरावती अपनी दो-तीन सहेलियों को साथ ले नगर के बाहर पहाड़ पर स्थित काली के मंदिर में गयी। यह समाचार मिलते ही जयसिंह भी अकेले उससे मिलने के लिए मंदिर की ओर चल पड़ा। काली मंदिर के रास्ते में पहाड़ के दोनों तरफ़ जंगल था।

जयसिंह उस रास्ते चला ही जा रहा था कि मंदिर से लौटनेवाली शरावती अपनी सहेलियों के साथ जयसिंह के सामने आ पहुँची। वह उसके निकट जाकर बोला–"मैं तुम से एकांत में बात करना चाहता हूँ।"

"अच्छी बात है।" शरावती ने उत्तर दिया। उसका उद्देश्य समझ कर उसकी सहेलियाँ दूर चली गयीं।

"मैंने आज तक किसी युवती के साथ प्यार नहीं किया, पर तुमको देखते ही प्यार किया। इस भाव के मेरे हृदय में पैदा होते ही तुम्हारे राज्य को जीतना

ये बातें मुझ से संबंधित नहीं हैं। मेरे पिताजी जिनके साथ मेरा विवाह करना चाहेंगे, उनके साथ विवाह करने के लिए मैं तैयार हूँ।" शरावती ने उत्तर दिया।

जयसिंह शरावती से कुछ कहने ही जा रहा था कि पीछे से शरावती की सहेलियाँ पुकार उठीं—"बाप रे बाप! बाघ आ गया, बाघ!"

शरावती तथा जयसिंह ने पीछे मुड़कर देखा कि एक बाघ झाड़ियों से आकर रास्ते में खड़ा हुआ है। शरावती की सहेलियाँ दूर भागी जा रही हैं, बाघ शरावती और जयसिंह की ओर देखते उनकी ओर बढ़ने लगा।

"शरावती, तुम भाग जाओ।" यह चिल्लाकर जयसिंह पास के एक पेड़ पर चढ़ गया। बाघ अभी दस गज़ की दूरी पर ही था कि शरावती डर के मारे बेहोश होकर वहीं गिर पड़ी।

इसी समय कहीं से एक बाण आकर बाघ की बगल में आ घुस गया। दूसरे ही क्षण जंगल से एक व्याध दौड़ता हुआ आया, अपनी कमर से छुरी निकाल कर बाघ पर टूट पड़ा। बाघ को उस

आदि मुझे सपने जैसा मालूम होता है। तुम्हारे पिता ने मुझ से कहा था कि तुम मेरे साथ विवाह करने को मान गयी हो। लेकिन मैं तुम से एक बात स्पष्ट जान लेना चाहता हूँ कि तुम मुझसे प्यार करके इस विवाह के लिए अपनी स्वीकृति दे चुकी हो या मैंने तुम्हारे पिता को युद्ध में जीत लिया है, इसलिए लाचार होकर अपनी स्वीकृति दे चुकी हो?" जयसिंह ने शरावती से पूछा।

"मैं यह भी नहीं जानती कि प्यार क्या चीज होती है? आप का युद्ध में जीतना और मेरे पिताजी का हार जाना

युवक ने मार डाला, किंतु इस बीच बाघ के पंजे से वह युवक घायल हो गया ।

बाघ को मार कर वह युवक शरावती के पास आया, लेकिन उसके शरीर से खून बह रहा था । शरावती बेहोश थी । वह उस युवती को अपने हाथों में उठाये तलाब की ओर चलने लगा । इतने में शरावती होश में आ गयी और बोली– "मुझे उतारो । मैं चल सकती हूँ ।"

युवक ने शरावती को नीचे उतारा । युवती ने इधर-उधर अपनी नज़र डाली तो दूर पर उसे बाघ की लाश दिखाई दी । तब शरावती ने युवक की ओर देखते हुये आश्चर्य से पूछा–"ओह यह सारा खून क्या है? क्या तुमने ही बाघ को मार डाला?"

"जी हाँ, मैं वक़्त पर आ पहुँचा, वरना न मालूम क्या होता?" व्याध ने कहा ।

"तुम मेरे साथ चलो । मैं तुम्हारा इलाज कराऊँगी ।" ये शब्द कहकर शरावती चल पड़ी । जयसिंह पेड़ से उतर कर ये सारे दृश्य देख रहा था ।

अपनी सहेलियों को बुलाकर शरावती जयसिंह की ओर देखे बिना व्याध को साथ ले अपने महल की ओर चल पड़ी ।

राज वैद्यों ने व्याध के घाव धोकर दवा लगायी । पट्टियाँ बांधकर राजमहल के एक कमरे में उसे लिटाया ।

जयसिंह थोड़ी देर बाद राजमहल को लौटा । उस रात को उसने बीरोत्तुंग से कहा–"मैंने तुम्हारी पुत्री के साथ विवाह करने का अपना उद्देश्य बदल लिया है । मैं ने नाहक़ तुम लोगों को कष्ट दिया है । तुमने विवाह की जो तैयारियाँ की हैं वे व्यर्थ न जावें, इसलिए तुम अपनी पुत्री के योग्य वर को ढूंढकर शीघ्र उसका विवाह करो । कल मैं अपनी सेना के साथ अपने देश को लौट जाऊँगा ।

यह बात तुम भूल जाओ कि हम लोगों के बीच युद्ध हुआ है।"

वीरोत्तुंग जयसिंह की ये बातें सुनकर अपने कानों पर आप विश्वास न कर पाया। आखिर उसने जयसिंह से कहा—"आपने जो बातें कहीं, वे मैं अपनी बेटी को सुनाऊँगा।"

उस रात को शरावती ने जयसिंह के निकट पहुँचकर पूछा—"क्या यह सच है कि आप ने मेरे साथ विवाह करने का अपना उद्देश्य बदल लिया है?"

"हाँ, बिलकुल सच है।" जयसिंह ने उत्तर दिया।

"आप ने बाघ के आने के पहले मुझ से पूछा था कि क्या तुम मुझ से प्यार करती हो? मैंने उसका उत्तर दिया था कि मैं नहीं जानती कि प्यार क्या चीज होती है? उस सवाल का अब मैं सही जवाब दे सकती हूँ। मैं समझ गयी कि प्यार क्या होता है? मैं आप से प्यार करती हूँ। आप कृपया कल न जाइयेगा।" शरावती ने कहा।

जयसिंह दूसरे दिन रुक गया। उसने शरावती के साथ विवाह किया। दोनों सुखपूर्वक अपने दिन बिताने लगे।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजन, मेरा एक संदेह है। क्या शरावती का यह कहना झूठ नहीं है कि वह जयसिंह के साथ प्यार करती है? जब वह जाने की सोचता था तब वह यह सोचकर खुश क्यों न हुई कि उसका पिंड छूट गया है। उसे ठहर जाने को क्यों बताया? बाघ को मारनेवाले युवक को अपने महल में ले जाते वक़्त शरावती ने जयसिंह की ओर आँख उठा कर भी न देखा था। ऐसी हालत में जयसिंह के प्रति उसके दिल में कब प्रेम पैदा हुआ? क्यों पैदा हुआ? इन संदेहों का समाधान

जानते हुये भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने उत्तर दिया– "जयसिंह अपने पराक्रम पर अभिमान रखता है। मगर उसने हृदय से शरावती को प्यार किया था। यही नहीं, उसने यह चाहा था कि शरावती भी उसके साथ प्यार करे। इस बात का निर्णय करने के लिए ही वह काली मंदिर की ओर चला गया। लेकिन वह यह नहीं जानता था कि राज्यों को जीतने के समान हृदयों को जीतना संभव नहीं है। जयसिंह ने शरावती से इसलिए विवाह करने से अपना विचार बदल लिया कि शरावती उसके साथ प्यार नहीं करती तथा बाघ के आने पर वह उसकी रक्षा नहीं कर पाया, उल्टे एक व्याध ने उसकी रक्षा की। इसलिए वह निराश हो गया था। मगर शरावती का प्यार जयसिंह के साथ उस वक़्त शुरू हुआ जब उसे मालूम हुआ कि जयसिंह वापस लौट रहा है। उसने बाघ के आक्रमण के पूर्व ही यह जान लिया था कि जयसिंह उससे प्यार करता है और साथ ही उसका प्यार भी चाहता है। फिर भी बलात् उसके साथ शादी करने की ताक़त रखते हुये भी उसने ऐसा नहीं किया। इसका कारण यह है कि वह शरावती को हृदय से चाहता है। व्याध को अपने साथ राजमहल ले जाते वक़्त उसने जयसिंह के संबंध में अधिक न सोचा, क्योंकि उसे पहले ही यह साबित हो गया था कि जयसिंह खुद अपनी रक्षा कर सकता है। इसलिए घायल व्याध की तुरंत चिकित्सा कराना उसका पहला कर्तव्य था।"

इस प्रकार राजा के मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

दो ठग
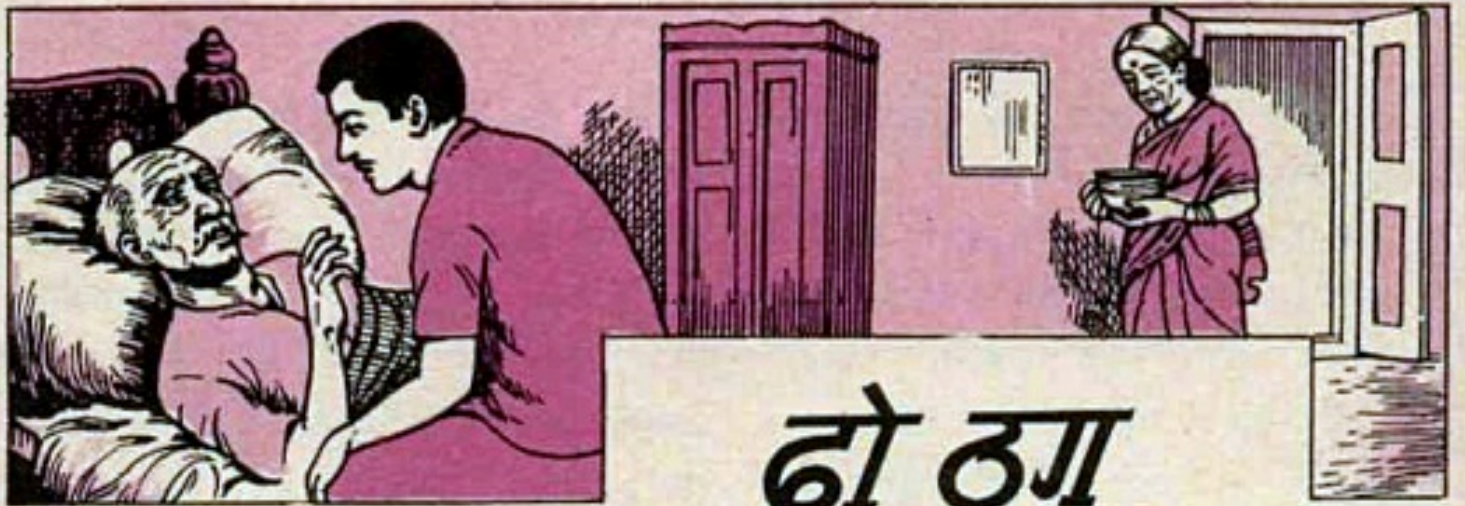
एक व्यापारी ने अपनी मृत्यु निकट आया जानकर अपने पुत्र जयदेव को बुलाकर चेतावनी दी—"बेटा, तुम चाहे किसी भी शहर में जाकर व्यापार करो, मगर कपिल नगर में जाकर व्यापार मत करो।"

अपने पिता की मृत्यु के बाद जयदेव ने व्यापार करना शुरू किया। एक दिन उसने अपनी माँ से कहा—"माँ, मैं कपिल नगर जा रहा हूँ।"

"यह कैसे हो सकता है? तुम्हारे पिता ने उस नगर में जाने से मना जो किया था।" माँ ने समझाया।

"जाना ही होगा, माँ! यह तो व्यापार की बात ठहरी।" जयदेव ने कहा।

जयदेव ने सस्ते में काफ़ी चंदन की लकड़ी खरदी। वह यह जानकर कपिल नगर के लिए चल पड़ा कि वहाँ पर चन्दन ज्यादा दाम पर बिकता है। चार मन वज़न की चन्दन की लकड़ी एक खच्चर पर लादे जयदेव शाम तक कपिल नगर में जा पहुँचा। तब तक अंधेरा हो चुका था।

नगर के बाहर एक सराय थी। सराय के बाहर दो व्यक्यिों ने उसे रोककर कहा—"आज रात को तुम्हें इसी सराय में ठहरना उचित होगा। अब तक नगर की सारी सरायें बंद हो चुकी होंगी।"

उन दोनों व्यक्तियों में से एक लंगड़ा था और दूसरा काना। दोनों ने जयदेव का माल खच्चर से उतारकर सराय के भीतर पहुँचा दिया। उन्हें मालूम हुआ कि वह माल चन्दन की लकड़ी है। उसमें से एक ने एक गट्ठर चुराया, उसकी आधी लकड़ियाँ सराय की रसोई के एक कोने में रखीं और बाक़ी चूल्हें में। जयदेव जब खाने बैठा तब लंगड़े ने पूछा—"भाई, तुम अपने साथ कैसा माल ले आये हो?"

अनिता अग्रवाल

"चन्दन की लकड़ी लाया हूँ।" जयदेव ने उत्तर दिया।

"अबे पगले! तुम कपिल नगर में चन्दन की लकड़ी लाये हो? यहाँ पर तो इतनी सस्ती बिकती है कि तुम्हारे हाथ क्या लग सकता है? हम तो उसे जलावन के काम में लाते हैं। इस शहर में तुम किसी से भी माँगो, चन्दन लकड़ी मुफ़्त देगा!" ये शब्द कहते लंगड़े ने चूल्हे में जलनेवाली लकड़ी लाकर दिखा दी।

जयदेव बड़ा निराश हो गया। उसके चेहरे पर निराशा देख लंगड़े ने उसे समझाया–"तुम बड़ी दूर से चन्दन की लकड़ी लाये हो। इसे वापस ले जाने में तुम्हें बड़ी तक़लीफ़ होगी। तुम ज़िंदगी भर मेरे नगर को कोसते रहोगे। यह मैं कदापि पसंद नहीं करता। यदि तुमको कोई एतराज न हो तो मैं तुम्हारे माल के लिए सात आशर्फ़ियाँ दाम दूँगा। कम से कम तुम्हारा राह-खर्च निकल आयगा।"

जयदेव ने सोचा कि यही करना उचित होगा। दूसरे दिन सवेरे वह शहर देखने चल पड़ा। उसे लगा कि इतनी दूर आकर भले ही फ़ायदा न उठावे, कम से कम शहर तक देखे बिना लौटने पर लोग उस पर हँसेंगे।

यह सोचकर वह शहर की एक दूकान में गया। दूकानदार अधेड़ उम्र का था, पर देखने में वह भला आदमी मालूम होता था। जयदेव ने उससे पूछा–"महाशय, आपका व्यापार कैसे चलता है? मैं फलाने नगर का व्यापारी हूँ।"

दोनों ने थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें कीं। तब जयदेव ने पूछा–"यहाँ पर चन्दन की लकड़ी कैसे बिकती है?"

"तुमको कितना चाहिए, बेटा?" दूकानदार ने पूछा।

"मुझे चार-पाँच मन चाहिए।" जयदेव ने जवाब दिया।

"चार-पाँच मन? उफ़! सारे नगर को छान डालो, तब भी एक गट्ठर भर लकड़ी न मिलेगी, बेटा!" दूकानदार ने कहा।

जयदेव एक दम चकित हो गया। उसने उस भले आदमी से कहा—"मैं तो बड़ी विपत्ति में फँस गया हूँ।" इन शब्दों के साथ उसने अपनी सारी कहानी सुनायी।

दूकानदार ने उसे समझाया—"बेटा, इस नगर के बाहर की सराय में दो अव्वल दर्जे के ठग हैं। वे सभी यात्रियों को ठगते हैं। उनमें एक लंगड़ा है और दूसरा काना। उनके धोखेबाज़ों का सही सबक़ सिखानेवाला एक ही आदमी है। वह सराय का रसोइया है। तुम उसको अपने जाल में फँसाओ, तो तुम्हारा काम चल जायगा।"

जयदेव ने सराय में लौटकर रसोइये की मदद मांगते हुए उसे धन का लोभ दिखाया।

"मुझे धन की कोई ज़रूरत नहीं है। आज रात को ये दोनों ठग एक ज्योतिषी से तुम्हारी बगल के कमरे में ही मिलनेवाले हैं। उनकी बातचीत सावधानी से सुनकर तुम जो उचित समझें, वही करो।" रसोइये ने सलाह दी।

जयदेव ने उस रात को बगल के कमरे की सारी बातचीत सुन ली।

"कल यहाँ पर एक नया व्यापारी आया है। उसकी चन्दन की लकड़ी को हम लोग सात अशर्फ़ियों में ख़रीद रहे हैं। हमको उसे बेचने पर कितना लाभ हो सकता है?" ठगों ने ज्योतिषी से पूछा।

"अगर वह व्यापारी इतनी दूर से आया है तो वह बेवकूफ़ न होगा। अगर वह यह पूछे कि मुझे सात अशर्फ़ियाँ नहीं चाहिये, सात सेर मक्खियाँ दो, तो तुम लोग क्या करोगे?" ज्योतिषी ने पूछा।

"ऐसा विचार उसके खोटे दिमाग में थोड़े ही आ सकता है?" ठगों ने कहा।

सवेरा होते ही जयदेव ने नगर के न्यायाधीश के पास जाकर शिकायत की–"सरकार, मैं व्यापार करने के लिए इस नगर में आया। मेरी चन्दन की लकड़ी को नगर के बाहर की सराय में रहनेवालों ने खरीदने की इच्छा प्रकट की। मुझे जल्दी अपने नगर को लौट जाना है। इसलिए आप से प्रार्थना है कि मेरे माल का दाम मुझे शीघ्र दिलवा दीजिये।"

न्यायाधीश ने दोनों ठगों को बुलवाकर पूछा–"मैंने सुना है कि तुम दोनों इस आदमी का माल खरीदना चाहते हो! उसका दाम देकर इसको भेज दो।"

"हमने उस माल का दाम सात अशर्फ़ियाँ देने को मान लिया है।" ठगों ने कहा।

"मुझे अशर्फ़ियों की जरूरत नहीं। मेरे माल का दाम सात सेर मक्खियाँ है।" जयदेव ने कहा। ठगों ने अचरज में आकर एक दूसरे का चेहरा देखा और न्यायाधीश से कहा कि तब तो वे यह माल नहीं खरीद सकते। जयदेव ने अपना माल नगर में अच्छे दाम पर बेच दिया।

उसी दिन काना ने नगर के एक दूसरे न्यायाधीश के पास जाकर शिकायत की–
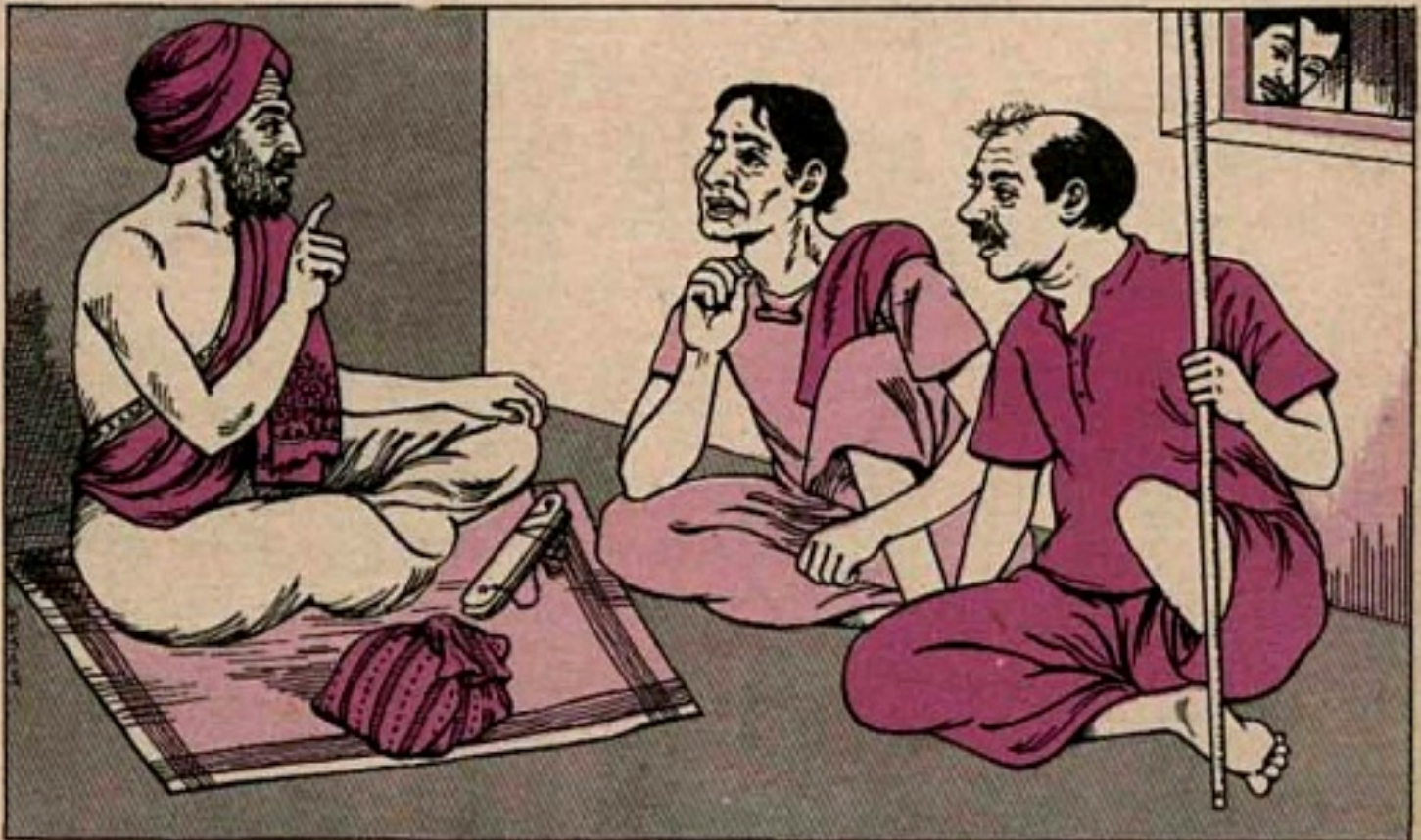
"सरकार, जयदेव नामक एक आदमी इस नगर में व्यापार करने आया है। वह नगर के बाहर की सराय में ठहरा है। वह मेरे ही गाँव का है। वह जब पैदा हुआ था, तब उसके एक आँख न थी। इस पर उसका पिता दुःखी था। इसलिए मैंने उस पर रहम खाकर अपनी एक आँख उसे उधार में दे दी। अब वह अच्छी हालत में है। अतः मुझे अपनी आँख वापस दिला दीजिये।"

न्यायाधीश ने जयदेव को बुलवाकर पूछा–"सुनते हैं कि इस आदमी ने तुमको एक आँख उधार में दी है। वह इस वक़्त उसे वापस चाहता है। इसका तुम क्या जवाब देते हो?"

मैंने इस आदमी को कभी देखा तक नहीं, सरकार।" जयदेव ने कहा।

"यह कहता है कि तुम्हारे ही गाँव का है। तुम्हारे पिता को अच्छी तरह से जानता है और तुम्हें एक आँख भी दी है।" न्यायाधीश ने पुनः कहा।

जयदेव ने थोड़ी देर सोचकर कहा– "सरकार, यह जान लेना ज़रूरी है कि यह आदमी जो कुछ कहता है, वह सच है या झूठ! आप उससे कहिये कि वह अपनी एक आँख निकाले, मैं भी अपनी एक आँख निकालूँगा। आप इन दोनों आँखों को तौलकर देखिये। यदि दोनों का वज़न बराबर हो तो आप मेरी आँख उसे दे दीजिये।"

"अच्छी बात है, ऐसा ही करेंगे।" न्यायाधीश ने कहा। पर ठग एक दम घबरा गया।

"सरकार, उसे छोड़ दीजिये। मैंने एक बार जो चीज़ दान दी, उसे वापस लेना ठीक न होगा।" यह कहकर काना चला गया। इस तरह ठगों से बचकर जयदेव लाभ के साथ अपना नगर लौटा।

प्रतियोगिता

सैकड़ों साल पहले की बात है। कमलापुर राज्य के शासक कमलध्वज के शूरध्वज नामक पुत्र तथा शालिनी नामक एक पुत्री थी।

शूरध्वज अपने नाम के अपयुक्त महान शूर था। वह समस्त प्रंकार की विद्याओं में प्रवीण था। कई युद्धों में वह विजय प्राप्त कर चुका था। उसका नाम सुनकर दुश्मन भी कांप उठते थे।

कमलध्वज ने शूरध्वज को युवराज बनाया और नाम के वास्ते वह राजा था, पर उसने शासन का सारा भार अपने पुत्र पर छोड़ रखा था।

कुछ समय बाद शालिनी विवाह के योग्य हुई। राजा कमलध्वज अपनी पुत्री के योग्य वर की खोज करने लगा। यह बात जब शूरध्वज को मालूम हुई तब उस ने कहा—"मैं अपनी बहन का विवाह एक महान वीर के साथ ही करना चाहूँगा। जो वीर मुझे पराजित करेगा, उसी के साथ मैं अपनी बहन का विवाह करूँगा।"

"तुम्हारा कहना ठीक है। मगर प्रतियोगिता तुम्हारे साथ नहीं, किसी दूसरे वीर के साथ प्रबंध करेंगे।" राजा ने कहा। पर शूरध्वज ने न माना। उसने हठ किया कि शालिनी के साथ विवाह करने वाला व्यक्ति उसी को जीते। इस प्रकार उसने घोषणा भी करायी।

कुछ समय तक कोई राजकुमार शूरध्वज के साथ लड़ने आगे न आया। क्योंकि शूरध्वज को जीतने का विश्वास उन लोगों में न था। लेकिन आखिर शामल देश का राजकुमार वायुवर्मा शूरध्वज को पराजित कर शालिनी के साथ विवाह करने आगे आया।

सत्यकृष्ण दास

यह घटना जब घटी, तब शूरध्वज महल में न था। इस बीच राज भटों ने राजकुमारी की बड़ी खोज की, लेकिन कोई फ़ायदा न रहा। शूरध्वज ने महल में लौटकर वायुवर्मा से कहा–"मेरी बहन को कोई दुष्ट उठा ले गया है। मैं उसे ढूंढ लाने के लिए जा रहा हूँ। प्रतियोगिता की बात हम बाद को देखेंगे।"

"मैं भी राजकुमारी को ढूंढने चलता हूँ।" वायुवर्मा ने कहा।

दोनों हथियार लेकर राजकुमारी की खोज में चल पड़े। वे पहले उद्यान के पास पहुँचे। वहाँ उन्हें पता लगा कि दुष्ट लोग शालिनी को किस दिशा में उठा ले गये हैं। बुद्धिमती शालिनी ने रास्ते भर में फूल गिरा दिये थे। उस रास्ते से चलकर शूरध्वज तथा वायुवर्मा नगर के बाहर दूर पर एक पेड़ के नीचे बैठे योगी के पास पहुँचे।

योगी को पार करने पर फूलों के निशान न थे। हो सकता है कि शालिनी के पास जो फूल थे, वे समाप्त हो गये हो। यह सोच वे फिर योगी के पास लौट आये और उससे पूछा–"महात्मन, क्या इस रास्ते से बलात एक युवती को दुष्ट उठा ले गये?"

राजा को लगा कि वायुवर्मा सब तरह से शालिनी के उपयुक्त वर है। शालिनी भी उसे अपने पति के रूप में स्वीकार करने को राजी हो गयी। पर वायुवर्मा को प्रतियोगिता में शूरध्वज को जीतना ज़रूरी था। इस प्रतियोगिता के लिए एक अच्छे मुहूर्त का निर्णय कर वायुवर्मा के ठहरने का प्रबंध राजमहल में किया गया। मगर प्रतियोगिता के पहले दिन एक दुर्घटना हुई। राजकुमारी शालिनी उद्यान में टहल रही थी, तभी कुछ दुष्ट उसे बन्दी बनाकर उठा ले गये।

"हाँ, चार बलवान व्यक्ति एक युवती को ढोकर ले जाते थे, मैंने देखा। मैंने उन्हें समझाया भी कि ऐसा करना अपराध है, पर उन लोगों ने मेरी बातों की परवाह न की। उस ओर जंगल में भाग गये।" योगी ने उन्हें समझाया।

जंगल का रास्ता एक पहाड़ी गुफा के पास जाकर समाप्त हो गया था। गुफा के द्वार के आगे उन्हें फूलों का एक गुच्छा दिखाई पड़ा।

"दुष्टों ने शालिनी को इस गुफा में छिपा रखा है। मैं राजकुमारी को छुड़ा लाऊँगा।" वायुवर्मा ने कहा।

"नहीं, तुम यहीं रह जाओ। मैं अपनी बहन को छुड़ा लाऊँगा।" ये शब्द कहते शूरध्वज गुफा में घुस पड़ा। उसके भीतर जाते ही गुफा का द्वार बंद हो गया।

गुफ़ा के बाहर खड़े वायुवर्मा को एक नारी की पुकार सुनाई दी। वायुवर्मा उसी दिशा में आगे बढ़ा और एक वृक्ष से बंधी शालिनी तथा उसे डरानेवाले चार बलवान व्यक्तियों को देखा। उनका नेता शालिनी से कह रहा था—"पगली, तुम्हारी रक्षा करने के लिए जो व्यक्ति आये, उनको मेरे अनुचरों ने गुफा में

बंदी बनाया है। अब तुम्हें मेरे साथ विवाह करना ही होगा। तुम्हारी रक्षा करने वाला अब कोई नहीं है।"

वायुवर्मा ने अपने म्यान से तलवार निकाल कर उस पर आक्रमण किया। उन चारों दुष्टों ने एक साथ वायुवर्मा का सामना किया। थोड़ी देर तक उन लोगों ने अपनी आत्मरक्षा की, इसके बाद वे चारों इस तरह भाग गये, मानों अपनी योजना के अनुसार कर रहे हो।

वायुवर्मा शालिनी के बंधन खोलकर उसे अपने साथ ले गुफा के पास आ पहुँचा। उसी समय भाग्यवश जंगल के निवासी उधर आ पहुँचे और गुफा के द्वार पर पड़ी चट्टान को हटा कर शूरध्वज को मुक्त किया। इसके बाद शूरध्वज तथा वायुवर्मा शालिनी को साथ ले राजमहल को लौट आये।

राजा ने पुरोहित को बुलवाकर आदेश दिया कि शालिनी का विवाह वायुवर्मा के साथ करने के लिए आवश्यक मुहूर्त निश्चय करे।

"प्रतियोगिता में मुझे जीतने के बाद ही उसका विवाह हो सकता है। शालिनी को अगर दुष्ट उठा न ले जाते तो आज हमारा द्वन्द्व युद्ध होता।" शूरध्वज ने कहा।

"आप लोगों की प्रतियोगिता आज हो गयी है न! मुझे छुड़ाने के लिए वायुवर्मा ने तुम से प्रतियोगिता की और उसमें वे विजयी हुए। अब दूसरी प्रतियोगिता की क्या आवश्यकता है?" शालिनी ने कहा।

शूरध्वज ने लजाकर सर झुका लिया। पर बेचारा वह यह न समझ पाया कि शालिनी को दुष्टों का उठा ले जाना एक नाटक है और राजा तथा शालिनी ने मिलकर ही यह नाटक रचा है।

धूर्त बुढ़िया

[६]

जुरेक की मछलियां की दूकान से दीनारों की गठरी उठा ले जाने का 'पारा' ने जो दो प्रयत्न किये, वे बेकार गये। फिर भी वह अपने प्रयत्न को चालू रखना चाहता था। इसलिए इस बार वह एक सपेरा का वेष धरकर एक पिटारी में तीन नाग ले आया और जुरेक की दूकान के सामने उन्हें खिलाने लगा।

'पारा' ने सांपों को खिलाते एक सांप को दूकान में इस तरह फेंका कि वह जुरेक के पांवों के पास जा गिरा। जुरेक घबराकर दूकान के अन्दर भाग गया।

उस गड़बड़ी में 'पारा' ने दीनारों की गठरी पकड़ ली। पर इतने में जुरेक दो सीसे के गोले ले आया। एक से उसने सांप का सर फोड़ दिया और दूसरे को 'पारा' के ऊपर जोर से फेंक दिया। 'पारा' तो बच गया, मगर सीसे का गोला रास्ते चलनेवाली एक बूढ़ी को जा लगा जिससे वह वहीं पर ठण्डा पड़ गयी।

वहां पर जो भीड़ इकट्ठी हुयी, वह जुरेक को मारने दौड़ी। जुरेक डर गया और उसने दूकान से दीनारों की गठरी निकालने को मान लिया। इसके बाद उस गठरी को ले जाकर उसने अपने रसोई घर में छिपा दिया। जुरेक की पत्नी ने उसे समझाया कि दीनारों की थैली का कोई अब काम न रहा, इसलिए वे सभी दीनार अपने पुत्र की वर्ष-गांठ पर खर्च कर दिये जाय, लेकिन जुरेक ने न माना।

उस रात को जुरेक ने एक सपना देखा। कोई चिड़िया अपनी चोंच से खोदकर दीनारों की थैली निकाल रही है।

"अरी, कोई चिड़िया अपनी चोंच से रसोई घर में गड्ढ़ा खोद रही है!" जुरेक ने अपनी औरत से कहा।

जुरेक की पत्नी दीपक लिये रसोई में पहुंची। उसने देखा, कोई खिड़की में से बाहर कूदकर भागा जा रहा है। उस भागनेवाले के हाथ में दीनारों की थैली है।

वह चोर और कोई न था, बल्कि 'पारा' उर्फ़ अली था। जुरेक ने जब दूकान से थैली हटायी, तब 'पारा' उस दूकान के चारों तरफ़ भटकता रहा। जुरेक को दीनारों की थैली रसोई घर में गाड़ते 'पारा' ने देखा और वह रात को लौटकर थैली को निकाले भाग गया।

"तुम भी कैसे गावदी ठहरे। मैंने बच्चे की वर्ष-गांठ पर सारे दीनार खर्च करने की सलाह दी, तो तुमने न माना। अब भोगो, नाहक चोरों के हाथों में पड़ गया।" जुरेक की औरत रोने लगी।

"अरी, हमारे दीनार कहां जायेंगे? तुम देखोगी, अभी मैं वापस ले आता हूं।" यह कहकर जुरेक घर से चल पड़ा।

"दीनार लिये बिना घर लौटोगे, तो मैं दर्वाज़ा न खोलूंगी।" जुरेक की औरत ने कहा। जुरेक भली भांति जानता था कि दीनारों की थैली हड़पने का किसने तीन बार प्रयत्न किया। यह भी वह जानता था कि वह युवक अहमद के घर रहता है। इसलिए वह नजदीक के रास्ते से जल्दी अहमद के घर पहुंचा और नकली चाभी से उसका दर्वाज़ा खोल भीतर पहुंचा, फिर किवाड़ बंद करके वह 'पारा' का इंतज़ार करने लगा। थोड़ी ही देर में 'पारा' आ पहुंचा। उसने दर्वाजे पर दस्तक दी।

जुरेक भीतर से अहमद की आवाज़ की नक़ल करते बोला—"'पारा'! तुम आ गये?...क्या थैली ले आये?...किवाड़ के नीचे से भीतर सरका दो। मैंने और

हसन ने हांक लगा ली है। दर्वाज़ा खोल कर सारी कहानी सुना देता हूँ।"

'पारा' ने सोचा कि किवाड़ के उस पार अहमद ही खड़ा है। इसलिए उसने दीनारों की थैली किवाड़ के नीचे से भीतर सरका दी। जुरेक थैली को ले सीढ़ियां चढ़कर छत पर गया। एक एक घर पार करते सड़क के किनारे के मकान में उतर कर गली में जा घुसा।

"पारा" ने दो-एक बार दर्वाज़ा खटखटाया, पर कोई आहट न हुई। उसे संदेह हुआ कि जुरेक ने उसे दगा दिया होगा। तुरंत वह भी निकट के रास्ते से जुरेक का घर पहुँचा। उसने देखा, छत पर एक कमरे में जुरेक की पत्नी अपने बच्चे को बगल में सुलाये सो रही है।

जुरेक की पत्नी के जागने के पहले 'पारा' ने उसके हाथ-पैर बांध दिये और बच्चे को एक टोकरी में लिटाकर वह जुरेक के इंतज़ार में खड़ा हो गया। इतने में जुरेक ने घर लौटकर दर्वाज़ा खटखटाया।

"पारा" ने जुरेक की पत्नी की नक़ल करते पूछा—"क्या थैली मिल गयी?"

"यह लो, मैं ले आया।" जुरेक ने कहा।

"थैली को टोकरी में रख दो। मैं दीनार गिनकर तब दर्वाज़ा खोल दूँगी।" ये शब्द कहते 'पारा' ने टोकरी को एक रस्सी से बांधकर नीचे उतारा। जुरेक ने दीनारों की थैली उस टोकरी में रख दी।

'पारा' ने टोकरी को ऊपर खींचा। दीनारों की थैली तथा लड़केवाली टोकरी ले घर की छतों में से होते अहमद का घर जा पहुँचा।

बड़ी देर तक दर्वाज़े के न खुलते देख जुरेक दर्वाज़े पर ज़ोर ज़ोर से हाथ मारने लगा। अड़ोस-पड़ोसवाले वहां पर जमा हुये। सब ने मिलकर दर्वाज़ा तोड़ दिया

हसन ने ज़ुरेक को समझाया–"घबड़ाओ नहीं. तुम्हारे दीनारों की थैली तुम्हें मिल जायगी । तुम्हारा बच्चा भी लौटाया जायगा। मेरे दोस्त के साथ तुम अपनी भांजी जीनाब की शादी पक्की करके तब जाओ।"

"यह तुम क्या कहते हो, हसन? जीनाब की शादी अली के साथ करने में मेरा क्या एतराज़ है? मगर जीनाब तो हाट में खरीदी जानेवाली भेड़ तो नहीं है न? उसके साथ जो शादी करना चाहता है, उसे उचित दहेज़ देना पड़ेगा।" ज़ुरेक ने कहा।

"बताओ, वह दहेज़ क्या है? मैं ज़रूर दूंगा।" 'पारा' ने कहा।

"अज़रय्या की बेटी कमर के पास एक सोने की बनी शाल, उसके आभूषण, उसकी सोने की कमरबंद, सोने की चप्पल हैं, उन्हें जो युवक जीनाब को ला देगा, उसी के साथ वह शादी करेगी। अगर तुम ला दोगे तो जीनाब खुशी से तुम से शादी कर सकती है।" ज़ुरेक ने बताया।

"अच्छी बात है। मैं ऐसा ही ला दूंगा।" 'पारा' ने कहा।

इसके बाद ज़ुरेक अपनी दीनारों की थैली तथा बच्चे को ले घर चला गया।

और भीतर पहुँचे तो देखते क्या हैं कि ज़ुरेक की औरत खाट से बंधी है। न दीनारों की थैली थी और न बच्चा था।

ज़ुरेक ने अपनी औरत के बंधन खोल दिये और उसके द्वारा सारा समाचार जान लिया। वह परेशान हुआ और अहमद के घर जाकर दर्वाज़ा खटखटाने लगा।

तब तक सवेरा हो रहा था। अहमद के घर के सब लोग जाग चुके थे।

ज़ुरेक ने 'पारा' उर्फ़ अली को देखते ही कहा–"तुमने दीनारों की थैली जीत ली, इसलिए उसे तुम्हीं रख लो, पर मेरे बच्चे को मुझे लौटा दो, तुम्हारा पुण्य होगा।"

हसन ने 'पारा' से कहा—"तुमने इस बार अपनी ताक़त से बढ़कर मुश्किल के काम को अपने सर पर ले लिया है। अजरय्या को तुमने क्या समझ रखा है। वह मंत्र-तंत्र जानता है। भूत और पिशाच उसके आदेश को मानते हैं। उसने बगदाद नगर के बाहर अपना महल सोने व चाँदी की ईंटों से बनवाया है। वह दिन भर नगर में ब्याज का व्यापार करता है और रात को घर लौटता है। रात के वक़्त जब वह उस घर में रहता है, तभी वह घर दूसरों को दिखाई देता है। वह एक झरोखे में खड़े हो, एक सोने के थाल पर अपनी बेटी की सोने की शाल रखकर ऐलान करता है—'ईराक, ईरान तथा अरब का कोई भी डाकू उससे बन सके तो यह हड़प सकता है।' कई डाकुओं ने उस शाल को हड़पने का प्रयत्न किया और खतम हो गये। अरब ने तुम्हारा भी नाश करने के लिए यह योजना की है। तुम उसके जाल में मत फसो।"

"मैंने वचन दिया है। जीनात पर वह सोने की शाल ओढ़ाकर, सोने की कमरबंद और सोने की चप्पल उसे पहना कर मैं उसके साथ शादी करूँगा।" 'पारा' ने हिम्मत के साथ कहा।

'पारा' को रोकना उनके लिए संभव न हुआ। 'पारा' उसी वक्त घर से निकल पड़ा और अजरय्या की दूकान पर पहुँचा। अजरय्या के दूकान बंद करने तक वह बाहर इंतजार करता रहा। अजरय्या ने सारा सोना तुलवाया, बोरों में भरकर गधों पर लदवाया। तब दूकान बंद करके गधे पर सवार हो चल पड़ा। 'पारा' भी उसके पीछे-पीछे नगर के बाहर चला गया। वह एक जगह रुका। अपने हाथ की थैली में से बालू निकाला। मंत्र फूँक कर उसे हवा में फेंक दिया। तुरत उसके सामने एक महल प्रत्यक्ष हुआ। वह
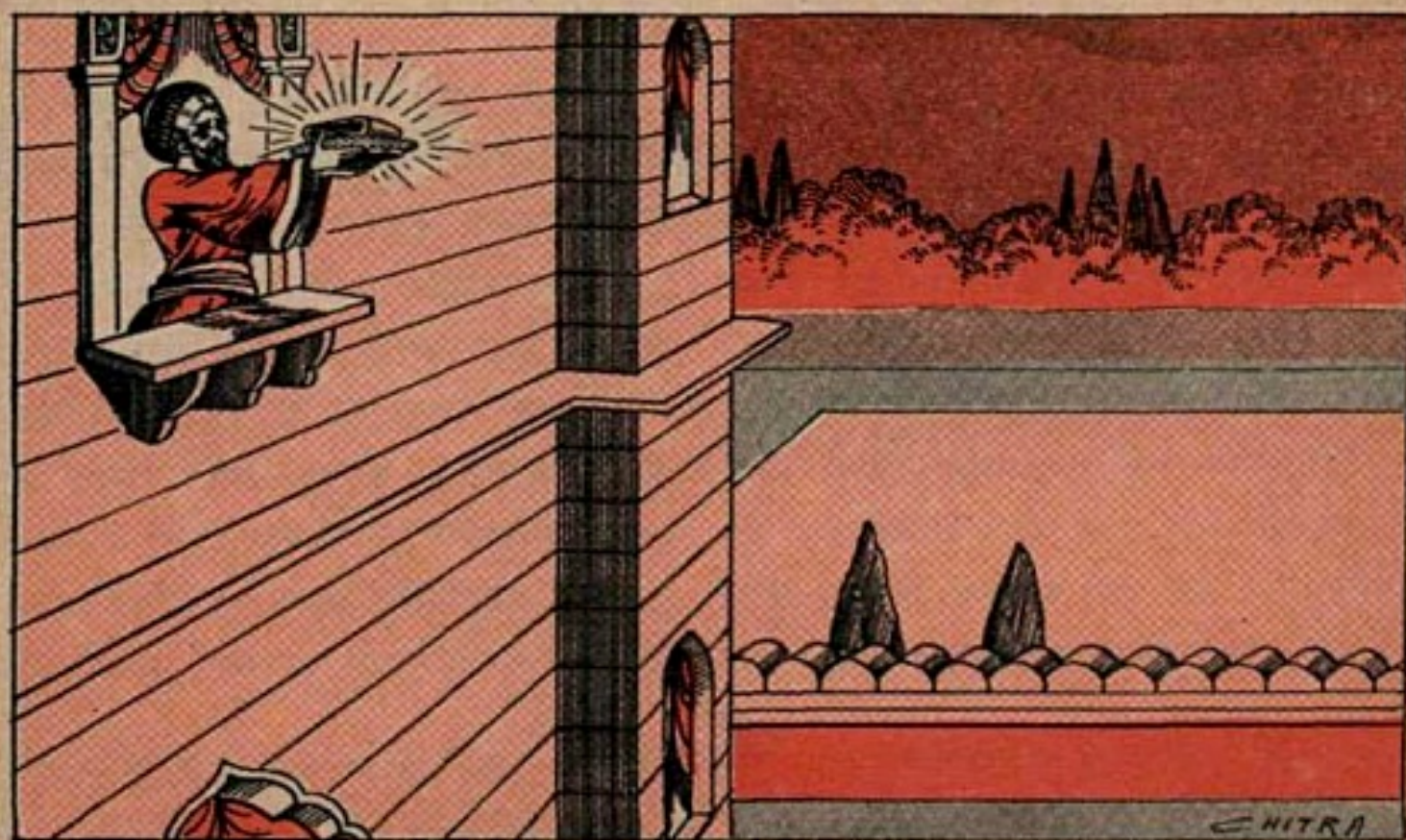
सोने व चाँदी की ईंटों से बना महल था। अजरय्या ने गधे के साथ उस महल में प्रवेश किया।

थोड़ी देर बाद वह एक खिड़की के पास दिखाई दिया। उसके हाथ में एक सोने का थाल और उसमें एक सोने की शाल थी। उसने पुकारा—"ईराक, ईरान तथा अरब के डाकुओ, तुममें बन सके तो मेरी बेटी की इस संपत्ति को चुरा कर उसके साथ शादी करो।"

'पारा' उर्फ अली को लगा कि अजरय्या से निवेदनकर उन वस्तुओं को प्राप्त करे। इसलिए वह नीचे से ही बोल उठा—"साहब, आप से मुझे जरूरी बात करनी है।"

"ऊपर आ जाओ।" अजरय्या ने कहा। 'पारा' ने महल पर पहुँच कर अपनी समस्या अजरय्या को बता दी।

अजरय्या जोर से हँस पड़ा, 'पारा' के हाथ की जाँच करके बोला—"यदि तुम्हारे लिए जान प्यारी है तो यह प्रयत्न बंद करो। किसी ने तुमको मरवा डालने के ख्याल से तुमको यह सलाह दी है। मगर तुम्हारी आयु मेरी आयु से अधिक है। वरना मैं तुमको इसी क्षण मार डालता।"

'पारा' अजरय्या की बातें सुनकर नाराज़ हो गया और तलवार निकाल कर धमकी दी-"मैं जो चीज़ें माँगता हूँ, सो दे दोगे या तुम्हारी जान लूँ?"

"तुम्हारा वह उठा हुआ हाथ गिर जाय।" अजरय्या चिल्ला उठा। दूसरे ही क्षण 'पारा' का दायाँ हाथ लटक गया।

'पारा' ने तलवार को बायें हाथ में ले लिया। पर अजरय्या ने उस हाथ को भी बेकार कर दिया।

"अब भी सही, तुम अपने विचार को बदलने को तैयार हो?" अजरय्या ने 'पारा' से पूछा।

"मुझे वह शाल और गहने चाहिए।" 'पारा' ने हठपूर्वक पूछा।

"तब तो तुम गधा बन कर उनको ढोते रह जाओ।" ये शब्द कहते अजरय्या ने 'पारा' के ऊपर पानी छिड़क दिया। 'पारा' गधे के रूप में बदल गया।

दूसरे दिन अजरय्या 'पारा' को अपनी दूकान तक हाँक ले गया। शाम को घर लौटकर उसे फिर मनुष्य बनाया और पूछा-"तुम नाहक अपनी ज़िंदगी को बरबाद न करो। मैं चाहूँ तो तुमको और क्षुद्रप्राणी बना सकता हूँ।"

ये बातें सुनकर डरने के बदले 'पारा' और नाराज़ होकर अजरय्या पर टूट पड़ा। अजरय्या ने उस पर पानी छिड़क कर उसे भालू बना दिया। दूसरे दिन अजरय्या की बेटी कमर ने अपने बाप से पूछा-"बाबा, पूछो तो इस युवक से कि क्या यह मेरे साथ शादी करने को तैयार है?"

"तुम ही पूछ लो।" अजरय्या क्रोध मे अपने कमरे में चला गया।

"तुम मुझे चाहते हो या मेरी चीज़ों को?" कमर ने अली से पूछा।

"तुम्हारी चीज़ों को ही चाहता हूँ। मुझे इन चीज़ों को दिलैला की बेटी

जीनाव को दहेज में देना है। वह बड़ी खूबसूरत है।" अली ने जवाब दिया।

"उसका मन नहीं बदलेगा।" ये शब्द कहकर अजग्या ने अली का बंदर बना दिया। कमर इस निर्णय पर पहुँची कि अली भले ही उसके साथ शादी न करे, मगर वह जो चीज़ें चाहता है, उन्हें देकर उसको सुख पहुँचाना चाहिये, कमर ने बड़ी मुश्किल से अपने बाबा को मना लिया। अपनी सारी चीज़ों को 'पारा' को देते हुए बोली—"तुम इन चीज़ों को ले जाकर जीनाव से शादी करो।" 'पारा' उर्फ़ अली को कमर के प्रति बड़ा प्रेम पैदा हुआ। वह कमर को साथ ले अहमद और हसन के पास पहुँचा और सारी कहानी उन्हें सुना दी।

"जीनाव के साथ शादी करने के बाद तुमको कमर के साथ भी शादी करना उचित होगा। वह अजरय्या की सारी जायदाद की वारिस है।" उन दोनों ने सलाह दी।

इसके बाद दोनों ने दिल्लैला, जीनाव और जुरेक को बुलवाकर वे सारी चीज़ें उन्हें दिखा दीं और शादी के लिए उन्हें मनवाया। उन चीज़ों को प्राप्त करने का तरीक़ा जानकर जीनाव ने 'पारा' को कमर के साथ भी शादी करने की स्वीकृति दी। 'पारा' ने जीनाव तथा कमर के साथ भी शादी की। उनकी शादी बड़ी ठाठ से मनायी गयी।

इसके कुछ दिन बाद 'पारा' ने खलीफ़ा के दरबार में नौकरी के लिए दरख्वास्त दी। उसकी सिफ़ारिश कबूतरों की डाक चलानेवाली दिल्लैला तथा दोनों कोत्वालों ने की। इस पर खलीफ़ा ने 'पारा' को मासिक एक हजार दीनारों की तनख्वाह पर राजभटों का सरदार नियुक्त किया। 'पारा' उर्फ़ अली अपनी दो पत्नियों के साथ आराम से अपने दिन बिताने लगा। (समाप्त)

मक्खीचूस

एक गांव में गोपू नामक एक बड़ा धनी किसान था। उसके पास काफी धन-दौलत थी, मगर वह अव्वल दर्जे का कंजूस था। लेकिन यह बात गांववालों को मालूम न थी। लोग उसके बारे में कहा करते थे कि गोपू बड़ा धर्मात्मा है, अपनी पंक्ति में किसी को भोजन कराये बिना वह कभी भोजन नहीं करता। यह उसका दैनिक नियम है।

क्योंकि हर दिन दुपहर को खाने के पहले गोपू द्वार के सामने खड़े हो जोर से चिल्ला उठता–"आज मेरे साथ भोजन करने के लिए कोई मेहमान नहीं है।" पर गली में कोई साधू-संन्यासी अचानक आ निकलता तो गोपू झट भीतर जाकर द्वार बंद कर लेता।

एक दिन सोम नामक एक गरीब आदमी अपनी पत्नी को साथ ले जीविका की खोज में उस गांव में आया। गांव में दरियाफ्त करने पर सोम को पता चला कि गोपू बड़ा धनी और उदार है। उससे मांगने पर कोई न कोई काम मिल सकता है।

सोम ने गोपू के घर जाकर अर्ज किया कि उसे तथा उसकी पत्नी को कोई काम दे तो उससे मिलनेवाली तनख्वाह से वे दोनों अपने पेट पालेंगे और जिंदगी भर उनकी चाकिरी करेंगे। उस वक्त गोपू के चारों तरफ़ गांव के कई बुजुर्ग बैठे थे। उनके सामने अपनी इज्जत बचाने के ख्याल से गोपू ने सोम और उसकी औरत को काम पर रखने को मान लिया। मगर उसने उस वक्त तनख्वाह का निर्णय नहीं किया।

गोपू के मकान के पीछे एक टूटी-फूटी झोंपड़ी थी। उसमें सोम अपनी पत्नी के

महेन्द्र जोशी

साथ रहने लगा। सोम घर के बाहर का काम देखता और उसकी पत्नी बर्तन मांझने, कपड़े धोने आदि घर का काम करती। उन दोनों से बेगारी लेते हुये गोपू उन्हें बहुत कम तनख्वाह देता था। वह तनख्वाह सोम और उसकी पत्नी को खाने भर के लिए भी काफ़ी न होती थी। इसलिए वे लोग कांजी बनाकर उसमें थोड़ा नमक मिलाते और मिर्च के साथ अपने पेट भरते थे। पर वे दोनों हमेशा प्रसन्न रहते थे।

गोपू के घर में कभी खाना बचता न था। गोपू की पत्नी इस तरह खाना बनाती कि एक दाना भी बचता न था।

"यही बेगारी और कहीं करते तो कम से कम पेट भर खाना मिलेगा। इसलिए चलो, कहीं और चलेंगे।" सोम की पत्नी कहा करती।

सोम के मन में भी गोपू के घर को छोड़ जाने का विचार था, मगर वह जाने के पहले गोपू को एक अच्छा सबक़ सिखाना चाहता था।

इसलिए वह अपने क्रोध को गोपू पर परिहास के रूप में प्रकट कर देता था। जब भी वह खाने बैठता, अपनी औरत से कहता—"अरी, क्या खीर बनाना खतम हो गया? जल्दी ले आओ! चीनी ज़रा ज्यादा डाल देना। साथ में दो केले भी लेते आओ!" सोम की औरत ये बातें सुनकर कांजी में थोड़ा और नमक मिला देती और दो मिर्च लाकर उसके सामने रख देती।

हर रोज़ सोम का यह चिल्लाना कि खीर और केले लेते आओ, गोपू की पत्नी के कानों में पड़ा। खीर का नाम सुनते ही उसकी जीभ से लार टपकने लगता था। जब से वह ससुराल में

आयी है, उसने एक बार भी खीर की गंध तक न ली थी। केलों की बात क्या कहा जाय। इसलिए सोम की बातें सुनकर वह ललचा उठती।

आखिर उस से रहा न गया। उसने खीर की बात अपने पति से कह दी। गोपू को भी बड़ा आश्चर्य हुआ। उसकी समझ में न आया कि वह जो थोड़ी-सी तनख्वाह देता है, उस से वे पति-पत्नी कैसे खीर और केले खाते हैं? उसने सोम से पूछ कर जानना चाहा।

दूसरे दिन जब सोम काम पर आया तो गोपू ने इधर-उधर की बातें सुनाकर पूछा—"सोम! तुम्हें कोई तकलीफ़ तो नहीं है न?"

"सरकार! हमारी जिंदगी भी कोई जिंदगी है! तकलीफ़ क्यों न होगी!" सोम ने जवाब दिया।

"अरे, तुम यह क्या कहते हो? रोज़ खीर और केले खाते हो और अपने को तकलीफ़ में फँसे बताते हो? यह कैसी बात है? मैं तुम्हारी बातों पर यकीन नहीं कर सकता। सच-सच बताओ।" गोपू ने फिर पूछा।

"यह बात है, सरकार! हम जैसे लोगों के लिए वे ही चीज़ें आसानी से

मिल जाती है! हम जो खीर खाते हैं, उसे मेरी औरत बड़ा अच्छा बनाती है।" सोम ने कहा।

"ओह! तब तो खीर बहुत कम खर्च में बननेवाली चीज़ है।" गोपू ने अपने मन में सोचा।

इसके कुछ दिन बाद गोपू के घर उसकी बेटी की सगाई के निमित्त पड़ोसी गाँव से वर के साथ क़रीब दस लोग आये। उनको देखते ही गोपू का कलेजा धड़क उठा। उन सब को दावत देना ज़रूरी था। पर क्या किया जा सकता था? उस खर्च से बचना ना मुमकिन भी था। इसी वक़्त गोपू के मन में एक विचार आया। उसने सोम को बुलाकर कहा—"अरे सोम, सुनो, तुम तुरंत बाज़ार में जाकर खीर के लिए आवश्यक सारी चीज़ें खरीद लो और साथ ही तुम रोज़ खाते हो न, ऐसे केले भी खरीद लाओ। यह खीर तुम अपनी पत्नी के हाथों से बनवा दो। याद रखो कि खर्चा ज़्यादा न हो।"

गोपू को सबक़ सिखाने का सोम को अच्छा मौक़ा मिला। वह बाज़ार जाकर थोड़े से सामान खरीद लाया। यह बात अपनी पत्नी को गुप्त रूप से सुनाकर मेहमानों के लिए रसोई बनाने का आदेश दिया।

मेहमान शादी की बातें पक्की करके खाने बैठे। गोपू की पत्नी परोसने के लिए लजा गयी और सोम की पत्नी को ही परोसने का काम सौंप दिया।

"सबको पहले खीर परोसो।" गोपू ने आदेश दिया।

सोम की पत्नी कांजी का बर्तन लिये एक एक पत्तल में कांजी, नमक तथा मिर्च परोसती गयी। अपने पत्तल में उन

चीज़ों को देख वर के पिता का चेहरा एकदम लाल हो उठा ।

गोपू ने अतिथियों के चेहरों के भाव देखकर आश्चर्य में पड़कर कहा–"अजी, आप यह क्या सोच रहे हैं? वह खीर है । मैंने आप लोगों के लिए विशेष रूप से बनवायी है! ठण्डा होने के पहले ही पी लीजिये, वरना अच्छा न होगा ।"

वर का पिता क्रोध में आकर उठ खड़ा हुआ और गरज उठा–"तुम भी कैसे भलमानुस हो! हमारा अपमान करना चाहते हो? तुम्हारे साथ हम संबंध जोड़ ले, तो हमारी इज्जत मिट्टी में मिल जायगी । कांजी परोसवा कर खीर बताते हो?"

इस तरह खरीखोटी सुनाकर सबको अपने साथ ले चला गया ।

यह बात मिनटों में सारे गाँव में फैल गयी ।

गोपू को सोम और उसकी पत्नी पर बड़ा क्रोध आया । उसने सोम को डांटते हुए कहा–"अरे दुष्ट! तुमने अपनी पत्नी के हाथों से खीर बनाने की बात बतायी । कांजी बनावा कर मेहमानों के बीच मेरा अपमान करते हो?" वहाँ पर इकट्ठे हुए लोगों ने सारी बातें जान लीं ।

सोम ने शांति के साथ जवाब दिया– "क्या तुम नहीं जानते, जिसके खाने का कोई चारा नहीं, उसके लिए कांजी ही खीर होती है? तुम मुझे जो तनख्वाह देते हो, उससे कांजी को छोड़ हमें खीर कहाँ से आ सकती है? तुमने वही खीर बनवाने को कहा जिसे हम रोज पीते हैं । इसमें भला हमारा क्या दोष है?"

गोपू को लगा, मानों उसका सर काट दिया गया हो! गोपू को सोम ने अच्छा सबक़ सिखाया था, इस पर सारे गाँववालों ने सोम की तारीफ़ की ।

गजपादलिंगेश्वर

मणिपुर राज्य पर मणिदत्त नामक राजा शासन करता था। वेश बदलकर राजा सारे देश में भ्रमण करता और जनता की तक़लीफ़ों को खुद जान लेता था। एक दिन राजा ने आड़ में खड़े हो एक झोंपड़ी के भीतर की बातचीत सुनी। एक आदमी कह रहा था–"मुझे राजा के दरबार में छोटी-सी नौकरी मिल जाय तो मैं सात मंजिलवाला महल खड़ा कर दूंगा।"

यह बात सुनने पर राजा को आश्चर्य हुआ। राजा ने उस आदमी का पता लगाया और दूसरे दिन उसे अपने भटों को भेजकर दरबार में बुला भेजा। उसको घुड़साजों का अधिकारी नियुक्त किया। उस आदमी का नाम प्रताप जादव था।

प्रताप जादव ने नौकरी में प्रवेश करते ही घुड़साजों को डरा-धमका कर दाने और घास में हिस्सा लेना शुरू किया।

साल भर होने के पहले ही जादव ने अपना घर बनाना शुरू किया और एक मंजिल पूरी कर दी। यह बात राजा को मालूम हुई। उसने जादव को उस नौकरी से हटाकर महावतों का अधिकारी नियुक्त किया।

इस बार जादव की आमदनी और बढ़ गयी। उसने और छे महीनों के अंदर दूसरी मंजिल भी पूरी कर दी।

यह खबर लगते ही राजा ने जादव को नदी के किनारे एकांत में रहने का प्रबंध किया। वहाँ पर उसके लिए एक झोंपड़ी बनवाकर उसके लिए जरूरी चीजें वहीं भेजने का राजा ने इंतज़ाम किया।

जादव ने राजा से निवेदन किया कि उसे नदी के किनारे रहने का अनुमति-पत्र दिला दे। राजा ने एक अनुमति-पत्र तैयार करवाकर उस पर अपनी मुहर लगवा दी।

अशोक कुमार वर्मा

जादव उस पत्र को ले नदी के किनारे वाली झोंपड़ी में पहुंचा। उसने नदी में मछलियाँ पकड़नेवालों तथा नाव चलानेवालों से शुल्क वसूल करना प्रारंभ किया। उसने सब को अनुमति-पत्र दिखाकर बताया कि राजा ने उसे शुल्क वसूल करने के लिए ही वहाँ भेजा है।

एक साल और पूरा हुआ। जादव के मकान की दो और मंजिलें बनकर तैयार हो गयीं। जादव की होशियारी देख राजा को आश्चर्य हुआ। राजा की समझ में न आया कि जादव कैसे धन कमाता है। राजा ने यह सोचकर उसे एक रेगिस्तान में भेज दिया कि देखें, निर्जन प्रदेश में उसे भेजने पर वह क्या करेगा? वहाँ पर एक झोंपड़ी बनवाकर राजा ने उसके खाने-पीने का प्रबंध कराया।

कुछ दिन बाद एक यात्री एक हाथी पर उस रेगिस्तान से होकर यात्रा करते आया। एक जगह गीले रेत में हाथी का पाद धँस गया जिस से वहाँ पर एक छोटा-सा गड्ढा पड़ गया। तुरंत जादव के मन में एक उपाय सूझा। लिंग की आकृतिवाला एक पत्थर लाकर जादव ने उस गड्ढे में रखा और उस पर एक पंडाल बनाया।

दूसरे देशों से रेगिस्तान में होकर मणिपुर जानेवाले व्यापारियों ने उस पंडाल को देखा तो उसका समाचार जानने वे लोग जादव के पास पहुँचे।

"यहाँ पर गजपादलिंगेश्वर का उदय हुआ है। मैं उस ईश्वर की सेवा करते इस रेगिस्तान में रहता हूँ।" जादव ने उन्हें समझाया।

व्यापारियों ने उस पत्थर को प्रणाम किया और यह मनौती भी की कि उन्हें व्यापार में लाभ हुआ तो उसमें से थोड़ा अंश गजपादलिंगेश्वर को समर्पित करेंगे। व्यापारियों को सहज ही व्यापार में लाभ

हुआ। उन लोगों ने उसे गजपादलिंगेश्वर की कृपा मानकर जादव को बहुत-सा धन दिया।

धीरे-धीरे गजपादलिंगेश्वर की महिमा मणिपुर तक फैल गयी। बड़ी संख्या में यात्री आने लगे। रेगिस्तान के बीच पंडाल बना। यात्रियों की संख्या बढ़ी, साथ ही जादव की आमदनी भी बढ़ती गयी।

उन्हीं दिनों में अचानक राजा बीमार पड़ा। रानी ने यह मनौती की कि राजा चंगे हो जायेंगे तो शरीर पर के सारे आभूषण उन्हें समर्पित करेंगी। राजा के चंगे होते ही रानी ने अपनी मनौती की बात राजा को सुनायी और राजा के दल-बल के साथ रानी रेगिस्तान के लिए चल पड़ी।

राजा के आगमन का समाचार सुनते ही जादव ने अपना वेश बदला। रानी से पूजा करवाकर उसके सारे आभूषण ग्रहण किया। इस घटना के कुछ ही दिन बाद जादव का सात मंजिलवाला मकान पूरा हो गया।

राजा के आश्चर्य का कोई ठिकाना न था। उसकी समझ में न आया कि रेगिस्तान में रहनेवाला जादव थोड़े ही दिनों में बाकी तीनों मंजिल एक साथ कैसे बनवा सका। राजा ने अपने भटों के द्वारा जादव को बुलवा कर पूछा—"तुमने मेरी नौकरी करते हुए कैसे सात मंजिलवाला मकान बनवाया?"

"महाराज, आप मुझे क्षमा करने की कृपा करें तो मैं सारी बातें आपको सुनाऊँगा।" जादव ने कहा।

राजा के मान लेने पर जादव ने राजा को सारी कहानी सुनायी।

राजा जादव की होशियारी पर बहुत खुश हुआ और उसको अपने सलाहकारों में से एक नियुक्त किया।

महाभारत

युधिष्ठिर ने राजसूययाग के संबंध में अपने भाइयों से परामर्श किया। युधिष्ठिर के मन में दो प्रकार की बातें काम कर रही थीं। एक यह थी कि राजसूययाग निर्विघ्न संपन्न हुआ तो अपार जनता का नाश होगा और दूसरी ओर दिव्य लोकों को प्राप्त करने की प्रबल आशा थी। फिर भी युधिष्ठिर ने राजसूय याग करने का निश्चय किया।

यह निश्चय युधिष्ठिर के लिए एक व्यसन-सा बन गया। जब भी मौक़ा मिलता, युधिष्ठिर अपने राजसूय याग के प्रयत्नों का ज़िक्र करते। अपने मंत्रियों से वे अकसर पूछा करते कि क्या उन्हें राजसूय याग करने की योग्यता है?

"राजन, राजसूय याग करने की आप पूरी योग्यता रखते हैं। आप इस याग को पूरा करके साम्राज्य का भार वहन कर सकते हैं।" मंत्रियों ने सलाह दी।

अपने मंत्रियों का आश्वासन पाकर युधिष्ठिर ने अपना दृढ़ निश्चय बना लिया। उनके तो बलवान भाई हैं। उनकी मदद से शत्रु को पराजित कर उनसे भेंटें ले सकते हैं। हालात तो उनके अनुकूल हैं। युद्ध और जनता के विनाश के डर से पीछे हटने की कोई ज़रूरत नहीं है। फिर भी उन्हें लगा कि कृष्ण का विचार जान लेना भी उपयुक्त होगा।

तुरंत युधिष्ठिर ने द्वारका को ख़बर भेजी। कृष्ण कुछ लोगों को साथ ले

२१. जरासंध की कहानी

इस पर कृष्ण ने यों जवाब दिया–"युधिष्ठिर, किसी भी दृष्टि से देखा जाय आप राजसूय याग करने योग्य हैं। फिर भी मैं एक बात बताना चाहूँगा। प्राचीन काल में परशुराम ने सभी क्षत्रियवंशी राजाओं का वध किया है, तब केवल सच्चे ऐलेक्ष्वाक वंशी क्षत्रिय राजा ही बच गये थे। वे ही कालांतर में एक सौ एक वंशों में फैल गये। ययाति तथा भोज वंश चौदह बन गये। इन सभी राजवंशों को हराकर जरासंध सम्राट बन बैठा है। वह महान बलवान और घमंडी है। उसको हरांना असंभव है। उसका सेनापति शिशुपाल है। पश्चिम दिशा का राजा भगदत्त आपके पिता राजा पांडु के मित्र होकर भी जरासंध की सेवा कर रहा है। इसके अलावा जरासंध के पक्ष में अनेक शक्तिशाली राजा हैं। उस जरासंध से तंग आकर ही हम लोग द्वारका जाकर वहीं टिक गये हैं। इसलिए जरासंध के रहते आप राजसूय याग नहीं कर सकते। पहले आपको उसका वध करना होगा।"

इन्द्रप्रस्थ आ पहुँचे। स्वागत-सत्कार के बाद युधिष्ठिर ने कृष्ण से कहा–"हे कृष्ण, मैं राजसूय याग करने की बड़ी इच्छा रखता हूं। मेरे सभी हितैषी भी मुझे इस कार्य के लिए प्रोत्साहन दे रहे हैं। लेकिन राजसूय याग करने के लिए बड़ी सामर्थ्य की आवश्यकता है। इस कार्य के लिए हमारी शक्ति पर्याप्त नहीं है। दूसरों की सलाह भी पूरी तौर से विश्वास करने योग्य नहीं है। तुम्हारी सलाह की मुझे बड़ी आवश्यकता है। तुम कहोगे तो मैं राजसूय याग बंद भी कर सकता हूं। तुम्हारा क्या विचार है?"

कृष्ण की बातें सुनकर युधिष्ठिर का उत्साह मंद पड़ गया। उन्होंने सोचकर कृष्ण से कहा–"सभी राजा केवल अपना

सुख देखते हैं। उन्हें साम्राज्य स्थापित करने का विचार नहीं है। अगर वे ऐसा उद्देश्य रखते भी हो, तो भी यह काम उतना सरल नहीं है। मैं भी अपना विचार बदल लूँगा। मैं यह सोचकर तृप्त हो जाऊँगा कि भविष्य में हमारे वंश में कोई न कोई राजसूय याग कर सकनेवाला व्यक्ति पैदा हो जायगा। जरासंध के सामने तुम भी ठहर नहीं सकते तो हम कैसे उसे जीत सकते हैं? जब कि हम लोग तुम्हारी शक्ति पर आधारित हैं।"

भीम को युधिष्ठिर की बातें अच्छी न लगीं। उसने कहा—"कार्य के प्रारंभ में ही जो लोग बिलकुल निराश हो जाते हैं, वे लोग कोई भी कार्य नहीं कर सकेंगे। आवश्यक योजना बनाने के लिए हमारे साथ कृष्ण हैं ही। मेरे बल और अर्जुन के पराक्रम भी कम नहीं हैं। हमें अपनी सामर्थ्य का परिचय देना होगा।"

कृष्ण ने भी सुझाया कि जरासंध को किसी युक्ति के साथ मारा जा सकता है। मगर युधिष्ठिर की हिम्मत न हुई। उन्होंने कहा—"साम्राज्य के लोभ में पड़कर मैं तुमको तथा मेरे दो नेत्रों के समान रहने वाले भीम और अर्जुन को उस

जरासंध पर हमला करने भेज नहीं सकता। तुम लोग उसको पराजित नहीं कर सकते।"

इस पर अर्जुन ने कहा—"जो व्यक्ति प्रयत्न नहीं करता, उसकी ज़िंदगी बेकार है। मेरे गांडीव, अक्षय तूणीर, रथ इत्यादि शत्रुओं के संहार के लिए न हों तो और किस काम के हैं?"

युधिष्ठिर को जरासंध का वृत्तांत जानने की इच्छा हुई। कृष्ण ने जरासंध की कहानी यों बतायी—बृहद्रथ नामक राजा ने मगध पर शासन किया था। वह इंद्र के समान था, उसके पास तीन अक्षौहिणियों की

सेना थी। उसने काशी नरेश की जुड़वीं कन्याओं के साथ विवाह किया, मगर संतान न हुई। इस पर उसने कई तीर्थ यात्राएँ की, पुत्रकामेष्ठि की, फिर भी कोई फ़ायदा न हुआ। आखिर वह अपनी पत्नियों के साथ तप करने चला गया।

चलते चलते एक बन में आम के वृक्ष के नीचे बृहद्रद को चण्डकौशिक नामक एक गौतम वंशी व्यक्ति दिखाई दिया। बृहद्रद उसकी सेवा करने लगा।

एक दिन चण्डकौशिक ने बृहद्रद से कहा—"बेटे, मैं तुम्हारी सेवा पर प्रसन्न हूँ। तुम जो चाहते हो, मांग लो।"

"तपस्वी, मैंने जप-तप और पुत्रकामेष्ठि इत्यादि सभी प्रयत्न किये, पर मुझे कोई संतान नहीं हुई। इसलिए विरक्त होकर आखिर तपस्या करने यहाँ चला आया हूँ। मेरी और कौन इच्छा हो सकती है?" बृहद्रद ने कहा।

उसी क्षण एक आम का फल चण्ड कौशिक की गोद में आ गिरा। उस फल को तपस्वी ने बृहद्रद के हाथ देकर कहा—"राजन, तुम यह फल ले जाओ। तुम्हें एक पुत्र होगा।"

बृहद्रद उस फल को लेकर अपनी पत्नियों के साथ राजधानी को लौटा।

बृहद्रद अपनी दोनों पत्नियों को बराबर प्यार करता था। इसलिए उसने उस फल के दो समान भाग करके दोनों को दिया। उसके फलस्वरूप दोनों एक ही समय गर्भवतियाँ हुई।

कालांतर में उन्हें दो बच्चे हुये। मगर हर एक बच्चे के आधा-आधा ही शरीर था। एक आँख, एक कान, एक हाथ, एक पैर, आधा मुँह, आधा पेट वाले इन बच्चों को जीवित देख रानियाँ डर कर रोने लगीं। उस समय धाइयाँ उन आधे आधे बच्चों को ले जाकर एक चौराहे पर फेंक आयीं।

उस प्रदेश में जरा नामक एक राक्षसी थी। वह मनुष्य और जानवरों को खाया करती थी। वह इन आधे आधे बच्चों को उठा ले जाने के लिए आयी और उसने उन दोनों बच्चों के शरीरों को मिला कर पकड़ लिया। तुरंत दोनों भाग एक हुये और एक ही बच्चे के रूप में बन गया। वह शिशु जोर जोर से रोने लगा। रोने की उस आवाज़ को सुनकर रानियाँ, दासियाँ और राजा भी दौड़ दौड़ आये।

जरा ने समझ लिया कि वह शिशु राजकुमार ही होगा, तब उसने मानवी

का रूप धरकर उस शिशु को राजा के हाथ में सौंपते हुये सारा समाचार उसे सुनाया। रानियाँ बहुत प्रसन्न हुईं और उस बच्चे को ले जाकर पालने लगीं।

बृहद्रद ने अपने पुत्र का नाम जरासंध रखा और हर साल सारे मगध में जरा के लिए उत्सव मनाने का आदेश दिया। धीरे धीरे जरासंध बड़ा पराक्रमी बना। उसने कई राजाओं को जीता।

जरासंध ने जब कृष्ण के द्वारा कंस को मारने का समाचार सुना तब उसने मथुरा पर आक्रमण किया। क्यों कि कंस की पत्नियाँ जरासंध की पुत्रियाँ थीं।

यह कहानी सुनाकर कृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा–"राजन, जरासंध किसी भी अस्त्र-शस्त्र से नहीं मरेगा। मल्लयुद्ध में उसे भीम मार सकता है। मेरी बात पर अगर आपको विश्वास है तो भीम और अर्जुन को मेरे साथ भेज दीजिये।"

"हे कृष्ण! तुम्हें छोड़ हमारे और हैं ही कौन? तुम यदि यह निर्णय करोगे कि जरासंध को मरना ही है तो मैं समझूंगा कि वह मर ही जायगा। तुम्हारा संकल्प हो तो मैं यही मानूंगा कि मैं ने राजसूय याग पूरा कर लिया है। तुम भीम और अर्जुन के साथ रहें तो मेरे भाई क्या नहीं कर सकते? तुम तीनों अभी रवाना हो जाओ और विजयी होकर लौटो।" युधिष्ठिर ने कहा।

कृष्ण, भीम और अर्जुन ब्राह्मणों का वेष धरकर इंद्रप्रस्थ से रवाना हुये। वे लोग मार्ग मध्य में पद्म सरोवर, कालकूट, गंडकी, महाशोण आदि को पार कर, पूर्व कोसल तथा मिथिला नगर से होते हुये पूर्वी दिशा की ओर बढ़े। तब मगध पहुँच कर गोरथ गिरि पर चढ़े। उसके ऊपर से उन लोगों ने राजधानी को देखा। वह बहुत ही

संपन्न नगर था। सर्वत्र जल और पशु दिखाई दे रहे थे। नगर के चतुर्दिक क़िले की भांति पाँच पहाड़ थे। इस वजह से उस नगर का नाम गिरिव्रज पड़ गया था।

गिरिव्रज के चतुर्दिक के पहाड़ों में से चैत्यक नामक पर्वत पर तीन भेरियाँ थी। कोई परदेशी व्यक्ति उस नगर में प्रवेश करता तो वे अपने आप बज उठती थीं। इसलिए कृष्ण, भीम और अर्जुन ने उस पहाड़ पर चढ़ कर पहले उन भेरियों को फोड़ दिया। मगर उस प्रदेश के नगर द्वार पर सशस्त्र सैनिक थे। अतः वे तीनों उधर से नगर में प्रवेश न कर चैत्यक शिखर पर चढ़े। वहाँ पर नगर के प्राकार को पार कर नगर में पहुँचे।

उस समय जरासंध ने कुछ अपशकुनों की आशंका करके उन की शांति करनी चाही। इसलिए वह स्नान करके दीक्षा में था। इस बीच कृष्ण तथा भीमार्जुन फूल मालाएँ बनाने वालों के पास गये। जबर्दस्ती उनसे मालाएँ लेकर पहन लीं। सारे शरीर में चन्दन मल कर ब्राह्मणों के वेष में जरासंध के पास पहुँचे।

जरासंध ने उन तीनों को ब्राह्मण ही समझा और आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। उन्हें अर्घ्य, पाद्य इत्यादि देकर उचित सत्कार करना चाहा। पर उन लोगों ने जरासंध के सत्कार को स्वीकार नहीं किया, उल्टे वे मौन रह गये।

कृष्ण ने जरासंध को भीमर्जुन को दिखा कर कहा–"राजन, इन दोनों ने मौनव्रत धारण किया है। इसलिए अर्धरात्रि के बीतने पर ही ये लोग तुम से बात करेंगे।"

"अच्छी बात है। तब तो आधी रात बीतने पर ही मैं उनका सत्कार करूँगा।" यह कहकर जरासंध ने उन तीनों को यज्ञशाला में भेज दिया।

तीन यक्षिणियाँ

एक किसान के मंगल नामक एक पुत्र था। वह खेती के काम में कोई दिलचस्पी न लेता था। इसलिए किसान ने सोचा कि उसे कोई दूसरा पेशा सिखलाना उचित होगा। यह सोचकर किसान मंगल को साथ ले घर से चल पड़ा।

कई गाँवों में जाकर किसान ने पूछ-ताछ की, पर कहीं कोई उसे अच्छी हुनर सिखानेवाला न मिला। कुछ दिन घूमने के बाद किसान ने एक मैदान के बीच एक बहुत बड़ा मकान देखा।

किसान जब उस मकान के निकट पहुँचा तब एक आदमी ने बाहर आकर पूछा–"तुम दोनों कौन हो? और क्या चाहते हो?"

"मैं एक किसान हूँ। यह मेरा बेटा मंगल है। आप इसको कोई हुनर सिखला दीजिये।" किसान ने कहा।

"हमारा पेशा क्या है, यह भी तुम जानते हो?" उस आदमी ने पूछा।

"चाहे तुम्हारा पेशा कोई भी क्यों न हो, मुझे कोई एतराज नहीं है। मैं चाहता हूँ कि मेरा बेटा किसी एक पेशे में प्रवीण बने।" किसान ने जवाब दिया।

"अच्छी बात है। तुम्हारे बेटे को हम अपना पेशा सिखला कर तुम्हारे घर भिजवा देंगे।" उस आदमी ने कहा।

वह आदमी एक लुटेरों के दल का नेता था। उसके साथ और चालीस लुटेरे उस मकान में रहते थे। किसान ने वह रात उन लुटेरों के साथ बितायी और सवेरे उठकर अपना गाँव चला गया।

मंगल को लुटेरों ने जो पहला सबक़ सिखलाया, वह पानी लाने का था। उस मकान से थोड़ी दूर पर एक नाला था। नाले से पानी लाने के लिए मंगल एक

घड़ा लेकर चल पड़ा। मंगल उस घड़े को पानी में डुबोने जा रहा था कि पानी में से एक औरत का हाथ बाहर निकला और उसने ज़ोर से घड़े को पकड़ लिया। मंगल खींचा-तानी करने लगा। इतने में उसके सर पर ज़ोर की मार पड़ी। इसके बाद बाहर निकला वह हाथ गायब हो गया। मगर उसके सर पर जिस बर्तन से मारा गया था, वह बर्तन मंगल को किनारे पर पड़ा मिला। मंगल उस बर्तन को पानी से धोकर चोरों के पास ले गया। उस बर्तन को देख-लुटेरे सब दंग रह गये। मंगल ने उन्हें सारा क़िस्सा सुनाया।

लुटेरों के नेता ने मंगल से गले लगकर कहा–"बेटा, इस बर्तन का दाम बहुत-कुछ होगा। सच कहा जाय तो यह बर्तन तुम्हारा है। मगर हम इसे बेच दें, तो आइंदा हमें चोरियाँ करने की ज़रूरत न होगी। तुम अपना हिस्सा घर ले जाकर ज़िंदगी भर आराम से रह सकते हो।"

लुटेरों का नेता तुरंत उस बर्तन को ले शहर जा पहुँचा। एक जौहरी को दिखा कर पूछा–"तुम इस बर्तन को कितना मूल्य देकर खरीद सकते हो?"

"मैं इसका मूल्य नहीं दे सकता हूँ। एक और बड़ा जौहरी है। उनके पास ले जाकर दिखा दो।" दूकानदार ने समझाया। जौहरी ने उस बर्तन की बड़ी देर तक जाँच की, तब कहा–"मैं इस बर्तन को जरूर खरीद लूँगा। मगर राजा इस बर्तन का जो मूल्य निश्चय करेंगे, वही मैं तुम्हें दूँगा।"

वे दोनों मिलकर राजा के पास पहुँचे।

जौहरी ने राजा से कहा–"महाराज, पिछले साल जिस चोर ने हमारी दूकान से इस बर्तन की तथा अन्य वस्तुओं की जो चोरी की, वह चोर मिल गया है।" ये शब्द कहते उसने राजा को लुटेरों के सरदार को दिखाया।

"यह बर्तन तुम्हें कहाँ से मिला? सच सच बता दो?" राजा ने लूटेरों के नेता से पूछा।

"हमारे पास काम सीखने के लिए जो लड़का आया है, उसे यह बर्तन एक नाले के किनारे मिल गया है।" लुटेरों के नेता ने जवाब दिया।

"तुम लोगों का पेशा क्या है?" राजा ने फिर पूछा।

"महाराज, सच बता दूं तो हमारा पेशा चोरी करने का है। हम लोग कुल चालीस आदमी हैं। हमारे पास काम सीखने के लिए कल ही एक लड़का आया है। उसी को यह बर्तन मिला है।" लुटेरों के सरदार ने कहा।

राजा ने अपने भटों को चोरों के मकान में भेजकर चालीस लुटेरों तथा मंगल को बुलवा भेजा। मंगल ने राजा के सामने झुककर प्रणाम करके बताया–"महाराज, मुझी को यह बर्तन मिला है। आपकी आज्ञा हो तो साल भर के अन्दर में इसी प्रकार के और ग्यारह बर्तन ला सकता हूँ। लेकिन आप यह वादा कीजिये कि इस नगर में रहनेवाले धोखेबाज गहनों के व्यापारियों के सर कटवा देंगे।"

"मैं तुमको छोड़ देता हूं। तुम साल भर के अन्दर इसी तरह के ग्यारह और बर्तन लेते आओ। तब तक मैं इन लुटेरों को बंदी बनाता हूं।" राजा ने कहा।

मंगल उस बर्तन को अपने कपड़ों में छिपाये लुटेरों के सरदार के घोड़े पर सवार हुआ और दूसरे राज्य में जाकर एक भटियाग्नि के घर जा पहुंचा।

"काकी, इस शहर की क्या विशेषताएँ हैं?" मंगल ने काकी से पूछा।

"क्या है बेटा, कहने को। हाल ही में इस शहर का राजकुमार जो तुम्हारी ही उम्र का था, मर गया। उसकी समाधि

की गयी। हर रात को कोई आकर राजकुमार की लाश को हिलाकर चले जाते हैं। राजा यह सोचकर बहुत परेशान हैं।" भटियारिन ने बताया।

मंगल काकी को साथ ले राजा के पास पहुँचा और बोला—"महाराज, मैं आज रात को राजकुमार की समाधि का पहरा दूंगा। मुझे अनुमति दीजिये।"

"अरे पहरेदार कुछ नहीं कर पाये। तुम भी चाहो तो पहरा देकर जांच करो।" राजा ने कहा।

मंगल धनुष और बाण लेकर राजकुमार की समाधि के पास गया। समाधि से थोड़ी दूर पर अंधेरे में छिप गया।

आधी रात के समय तीन सफ़ेद कबूतर आसमान से उड़ते हुए समाधि के पास आ पहुँचे। और वे तीनो स्त्रियों के रूप में बदल गये। एक स्त्री के हाथ में लाल छड़ी थी। उसने एक छोटा-सा वस्त्र ज़मीन पर बिछाकर उस पर लाल छड़ी से मारकर कहा—"खाना परोसो।" तुरंत चार थालों में खाना भर गया। इसके बाद वह समाधि के पास जाकर उसके पत्थर पर मारा और कहा—"खुल जाओ।"

पत्थर ऊपर उठा। शव को छड़ी से छूकर बोली—"उठकर चले आओ।"

तुरंत राजकुमार प्राणों के साथ उठकर समाधि से ऊपर आया।

इसके बाद चारों खाने बैठ गये।

मौक़ा पाकर मंगल ने अपना तीर इस तरह उन स्त्रियों के बीच छोड़ा जिससे वह बाण राजकुमार को न लगे। तुरंत तीन स्त्रियाँ कबूतर बनकर उड़ गयीं। वे अपने साथ जो वस्त्र और छड़ी लायी थीं, वे वहीं रह गयीं। मंगल ने उन चीज़ों को हाथ में लेकर राजकुमार से कहा—"अब तुम्हें इस समाधि से क्या मतलब? घर चलो।"

(और है)

संसार के आश्चर्य:

१०८. वक्तृत्व की शिला

ऐर्लैण्ड के कार्क नामक नगर के समीप ब्लार्नी नामक किला है । इसके बुर्ज की दीवार में एक प्रसिद्ध शिला है । उसे "ब्लार्नी स्टोन" कहते हैं । कहा जाता है कि जादूगरनी ने एक ऐसा वर दिया है जिसके अनुसार जो कोई उस शिला को चूमेगा, उसे वक्तृत्व प्रदान करेगी । पर उस शिला को चूमना उतना सरल नहीं है । फिर भी कहा जाता है कि लोगों के चुबनों से वह शिला चिकनी हो गयी है ! (अंग्रेजी में "ब्लार्नी" का अर्थ खुशामदी होता है । ऐर्लैण्ड को "ब्लार्नी लैण्ड" भी कहते हैं ।)